गरवी गुजरात

PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 059
दि. 28.06.2026,
रविवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

बंगाल में सख्त कानून की तैयारी: बिना ट्रायल 12 महीने तक हिरासत, संगठित अपराध पर शिकंजा कसने का दावा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की राजनीति और कानून-व्यवस्था एक बार फिर बड़े बदलाव की दहलीज पर खड़ी दिखाई दे रही है। राज्य सरकार ने अपराध, संगठित गिरोहों और सार्वजनिक व्यवस्था से जुड़ी चुनौतियों से निपटने के लिए दो नए विधेयक लाने की तैयारी पूरी कर ली है। प्रस्तावित कानूनों में ऐसे प्रावधान शामिल किए गए हैं, जिनके तहत किसी व्यक्ति को सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा मानने पर बिना मुकदमा चले अधिकतम 12 महीने तक एहतियातन हिरासत में रखा जा सकेगा। इसके साथ ही दंगे, हिंसा और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वालों से भरपाई वसूलने के लिए उनकी संपत्ति तक नीलाम किए जाने का प्रावधान भी प्रस्तावित है। सरकार इसे कानून-व्यवस्था मजबूत करने की दिशा में बड़ा कदम बता रही है, जबकि विपक्ष और नागरिक अधिकार संगठनों ने इसे नागरिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत अधिकारों के लिए गंभीर चुनौती करार दिया है।

राज्य सरकार विधानसभा में 'वेस्ट बंगाल पब्लिक सेफ्टी एंड कंट्रोल ऑफ एंटी-सोशल एक्टिविटीज बिल' तथा 'वेस्ट बंगाल मेंटेनेंस ऑफ पब्लिक ऑर्डर बिल' पेश करने जा रही है। इन दोनों विधेयकों का उद्देश्य पुलिस और प्रशासन को ऐसे मामलों में अधिक अधिकार देना है, जहां सरकार को लगे कि किसी व्यक्ति या संगठित समूह की गतिविधियां सार्वजनिक शांति, सामाजिक सुरक्षा या आर्थिक व्यवस्था के लिए खतरा बन रही हैं। सरकार का कहना है कि बदलते अपराध स्वरूप और संगठित आपराधिक नेटवर्क से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए मौजूदा कानूनी व्यवस्था पर्याप्त नहीं है, इसलिए नए कानूनों की आवश्यकता महसूस की गई है।

सबसे अधिक चर्चा उस प्रावधान को लेकर हो रही है जिसमें किसी संदिग्ध व्यक्ति को बिना मुकदमे के अधिकतम एक वर्ष तक हिरासत में रखने की व्यवस्था प्रस्तावित की गई है। सरकार का तर्क है कि कई मामलों में संगठित अपराध से जुड़े लोगों के खिलाफ पर्याप्त प्रारंभिक साक्ष्य होने के बावजूद लंबी कानूनी प्रक्रिया के कारण समय रहते कार्रवाई नहीं हो पाती, जिससे वे दोबारा अपराध करने लगते हैं। ऐसे मामलों में एहतियाती हिरासत का प्रावधान पुलिस और प्रशासन को प्रभावी कार्रवाई का अवसर देगा।

24 जून को जारी अधिसूचना के अनुसार समाज विरोधी गतिविधियों की परिभाषा को भी व्यापक बनाया गया है। ऐसे सभी कार्य, जिनसे लोगों में भय, असुरक्षा या दहशत का वातावरण पैदा हो, सार्वजनिक व्यवस्था बाधित हो, व्यापारिक गतिविधियां प्रभावित हों या किसी व्यक्ति को उसकी संपत्ति से अवैध रूप से बेदखल किया जाए, उन्हें समाज विरोधी गतिविधियों की श्रेणी में शामिल किया जाएगा। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक अथवा निजी संपत्ति को नुकसान पहुंचाना, अवैध खनन करना, रेत और पत्थर की तस्करी, वन संपदा की अवैध कटाई, वन्यजीवों से जुड़े अपराध तथा सरकारी राजस्व को नुकसान पहुंचाने वाली गतिविधियां भी इस कानून के दायरे में लाई जाएंगी।

प्रस्तावित विधेयक में पहली बार 'गुंडा' शब्द की कानूनी परिभाषा भी निर्धारित की गई है। इसके तहत ऐसे व्यक्ति, जो किसी गैंग, सिंडिकेट या संगठित आपराधिक गिरोह से जुड़े हों तथा जिनके खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 111 या 112 के तहत आरोपपत्र दाखिल किया जा चुका हो, उन्हें इस श्रेणी में रखा जाएगा। इसके अलावा शस्त्र अधिनियम, विस्फोटक पदार्थ अधिनियम, मादक पदार्थों से जुड़े कानूनों तथा अनैतिक देह व्यापार निवारण अधिनियम के तहत अपराध करने वाले अथवा अपराध का प्रयास करने वाले लोगों को भी इस कानून के अंतर्गत शामिल किया जाएगा।

सरकार ने केवल गिरफ्तारी और हिरासत तक ही अपने प्रस्ताव सीमित नहीं रखे हैं। सार्वजनिक और निजी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने वाले लोगों के खिलाफ आर्थिक कार्रवाई का भी प्रावधान किया गया है। प्रस्तावित संशोधन के अनुसार यदि किसी दंगे, हिंसक प्रदर्शन, अवैध जमावड़े या सार्वजनिक अशांति के दौरान सरकारी अथवा निजी संपत्ति को नुकसान पहुंचता है, तो उसकी भरपाई सीधे दोषियों से वसूली जाएगी। इसके लिए विशेष क्लेम कमीशन गठित किए जाएंगे, जो नुकसान का आकलन करेंगे और मुआवजे की राशि निर्धारित करेंगे। यदि दोषी निर्धारित समय में राशि जमा नहीं करते हैं तो उनकी चल अथवा अचल संपत्ति की नीलामी कर नुकसान की भरपाई की जा सकेगी।

हिरासत में लिए गए व्यक्तियों के मामलों की समीक्षा के लिए तीन सदस्यीय एडवाइजरी बोर्ड गठित करने का भी प्रस्ताव है। इन बोर्डों की अध्यक्षता उच्च न्यायालय के वर्तमान या सेवानिवृत्त न्यायाधीश करेंगे। बोर्ड यह तय करेगा कि संबंधित व्यक्ति की हिरासत उचित है या नहीं। प्रस्तावित व्यवस्था के अनुसार बोर्ड की कार्यवाही गोपनीय होगी और सामान्य परिस्थितियों में वकीलों को सीधे पक्ष रखने की अनुमति नहीं होगी। सरकार का कहना है कि इससे प्रक्रिया तेज होगी और संवेदनशील मामलों में गोपनीयता बनी रहेगी।

राज्य सरकार ने इन विधेयकों के समर्थन में राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ों का भी हवाला दिया है। सरकार के अनुसार वर्ष 2024 में पश्चिम बंगाल में 1,467 हत्या के मामले, 38,112 महिला अपराध, 22,530 अपहरण तथा 34 हजार से अधिक हिंसक अपराध दर्ज किए गए। सरकार का दावा है कि बढ़ते अपराध और संगठित गिरोहों की गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण के लिए कठोर कानूनी ढांचे की आवश्यकता है और यही इन नए विधेयकों का उद्देश्य है।

सरकार यह भी स्पष्ट कर रही है कि इस प्रकार के कानून देश के कई अन्य राज्यों में पहले से लागू हैं। उत्तर प्रदेश में संगठित अपराध नियंत्रण से जुड़े विशेष कानून, गुजरात में आतंकवाद एवं संगठित अपराध नियंत्रण कानून, महाराष्ट्र में एमसीओसीए (MCOCA) तथा तमिलनाडु का चर्चित 'गुंडाज एक्ट' पहले से प्रभावी हैं। राज्य सरकार का कहना है कि पश्चिम बंगाल में प्रस्तावित कानून भी इसी प्रकार संगठित अपराध, अवैध गतिविधियों और सार्वजनिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाले तत्वों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से तैयार किए गए हैं।

हालांकि विपक्षी दलों और नागरिक अधिकार संगठनों ने इन प्रस्तावों पर गंभीर सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि बिना मुकदमे के लंबे समय तक हिरासत में रखने की व्यवस्था संविधान द्वारा प्रदत्त व्यक्तिगत स्वतंत्रता और प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों पर प्रभाव डाल सकती है। आलोचकों का यह भी कहना है कि यदि व्यापक अधिकार प्रशासन को दिए जाते हैं तो भविष्य में उनके दुरुपयोग की आशंका से भी इनकार नहीं किया जा सकता। राजनीतिक विरोधियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं या असहमति व्यक्त करने वाले लोगों के खिलाफ ऐसे कानूनों के इस्तेमाल को लेकर भी चिंता व्यक्त की जा रही है।

कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे कानूनों की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि उनका क्रियान्वयन कितना निष्पक्ष, पारदर्शी और न्यायिक निगरानी के तहत किया जाता है। यदि इन प्रावधानों का उपयोग केवल संगठित अपराध और गंभीर कानून-व्यवस्था संबंधी मामलों तक सीमित रहता है तो इससे अपराध नियंत्रण में मदद मिल सकती है, लेकिन यदि इनका दायरा आवश्यकता से अधिक बढ़ा तो नागरिक अधिकारों और प्रशासनिक जवाबदेही पर बहस तेज होना तय है।

अमेरिका में लहराया भारतीय समुद्री गौरवः बाल्टीमोर पहुंचा आईएनएस सुदर्शनी, दुनिया को देगा भारत की समुद्री विरासत और मित्रता का संदेश

बाल्टीमोर। भारतीय नौसेना का प्रतिष्ठित पाल प्रशिक्षण पोत आईएनएस सुदर्शनी अपनी बहुप्रतीक्षित समुद्री यात्रा के तहत अमेरिका के मैरीलैंड राज्य स्थित बाल्टीमोर बंदरगाह पहुंच गया है। 'लोकायन-26' समुद्री अभियान के अंतर्गत 26 जून को बाल्टीमोर पहुंचे इस ऐतिहासिक जहाज का आगमन केवल एक नियमित नौसैनिक यात्रा नहीं माना जा रहा, बल्कि इसे भारत की समृद्ध समुद्री परंपरा, सांस्कृतिक विरासत और वैश्विक समुद्री कूटनीति का महत्वपूर्ण प्रतीक बताया जा रहा है। भारतीय नौसेना का यह पारंपरिक पाल पोत आगामी दिनों में अमेरिका में आयोजित होने वाले प्रतिष्ठित 'सेल 250 मैरीलैंड' समारोह में भाग लेने के साथ-साथ विभिन्न समुद्री, सांस्कृतिक और सामुदायिक कार्यक्रमों में भी हिस्सा लेगा। इस यात्रा को भारत और अमेरिका के बीच लगातार मजबूत होते रणनीतिक और समुद्री संबंधों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

आईएनएस सुदर्शनी ने अमेरिका के नॉरफॉक से बाल्टीमोर तक की अपनी यात्रा के दौरान ऐतिहासिक चेसापीक एवं डेलावेयर नहर को पार किया। इस मार्ग पर स्थित कई प्रसिद्ध और ऐतिहासिक पुलों के नीचे से गुजरते हुए भारतीय नौसेना के इस पाल पोत ने स्थानीय लोगों और समुद्री विशेषज्ञों का ध्यान आकर्षित किया। विशाल पालों से सुसज्जित यह जहाज आधुनिक युद्धपोतों की भीड़ के बीच अपनी पारंपरिक बनावट और आकर्षक स्वरूप के कारण अलग पहचान बनाता है। समुद्र में इसकी उपस्थिति भारत की सदियों पुरानी नौवहन परंपरा और समुद्री सभ्यता की याद दिलाती है।

भारतीय नौसेना के अधिकारियों के अनुसार 'लोकायन-26' अभियान का उद्देश्य केवल नौसैनिक प्रशिक्षण तक सीमित नहीं है। यह अभियान दुनिया के विभिन्न देशों तक भारत की समुद्री संस्कृति, ऐतिहासिक विरासत और 'वसुधैव कुटुंबकम' के संदेश को पहुंचाने के लिए आयोजित किया गया है। भारत की यह प्राचीन अवधारणा पूरी दुनिया को एक परिवार मानने की भावना का प्रतिनिधित्व करती है। इसी सोच के अनुरूप आईएनएस सुदर्शनी अपनी प्रत्येक यात्रा के दौरान विभिन्न देशों के लोगों, नौसेनाओं और समुद्री संस्थानों के साथ सांस्कृतिक और व्यावसायिक संवाद स्थापित करता है।

पिछले पांच महीनों में इस जहाज ने 13 हजार से अधिक समुद्री मील की लंबी यात्रा पूरी की है। इस अभियान की शुरुआत केरल के कोच्चि से हुई थी और इसके बाद जहाज ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्गों पर सफलतापूर्वक नौवहन करते हुए कई देशों का दौरा किया। लंबी समुद्री यात्रा के दौरान जहाज पर मौजूद अधिकारी, नाविक और कैडेट पारंपरिक नौवहन प्रणाली, समुद्री अनुशासन, नेतृत्व क्षमता तथा चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में संचालन का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। भारतीय नौसेना का मानना है कि आधुनिक तकनीक के युग में भी पारंपरिक समुद्री कौशल का प्रशिक्षण नौसैनिक अधिकारियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बना हुआ है।

बाल्टीमोर में आयोजित होने वाला 'सेल 250 मैरीलैंड' समारोह अमेरिका की स्थापना की 250वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित किया जा रहा है। इस अंतरराष्ट्रीय आयोजन में दुनिया के कई देशों के पारंपरिक और आधुनिक जहाज भाग लेंगे। ऐसे प्रतिष्ठित आयोजन में आईएनएस सुदर्शनी की भागीदारी भारत की बढ़ती वैश्विक उपस्थिति और समुद्री क्षेत्र में उसकी सक्रिय भूमिका का प्रतीक मानी जा रही है। समारोह के दौरान भारतीय नौसेना के अधिकारी विभिन्न देशों की नौसेनाओं के प्रतिनिधियों से मुलाकात करेंगे तथा समुद्री सहयोग, प्रशिक्षण और सांस्कृतिक आदान-प्रदान से जुड़े कार्यक्रमों में भाग लेंगे।

आईएनएस सुदर्शनी भारतीय नौसेना के लिए विशेष महत्व रखता है। इसका निर्माण गोवा शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा किया गया है और इसे विशेष रूप से नौसैनिक कैडेटों को पारंपरिक नौवहन का प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से विकसित किया गया था। यह भारतीय नौसेना के प्रसिद्ध पाल प्रशिक्षण पोत आईएनएस तरंगिनी की सहोदर नौका है। जहाज का डिजाइन प्रसिद्ध ब्रिटिश नौसैनिक वास्तुकार कॉलिन मुडी ने तैयार किया था, जिसमें पारंपरिक समुद्री संरचना और आधुनिक सुरक्षा मानकों का उत्कृष्ट समन्वय देखने को मिलता है।

करीब 54 मीटर लंबा यह जहाज एक साथ पांच अधिकारियों, 31 नाविकों तथा 30 प्रशिक्षु कैडेटों को लेकर समुद्री अभियान पर निकल सकता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह बिना किसी बाहरी सहायता के लगभग 20 दिनों तक समुद्र में निरंतर संचालन करने में सक्षम है। जहाज पर प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले कैडेट केवल नौवहन तकनीक ही नहीं सीखते, बल्कि टीम भावना, अनुशासन, नेतृत्व, समुद्री चुनौतियों का सामना करने की क्षमता और कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेने जैसे महत्वपूर्ण गुण भी विकसित करते हैं।

किसान पुत्र और किसानों के मसीहा इसुदान गढ़वी साणंद के डरण गांव पहुंचे

- किसानों के लिए लगातार आवाज उठाने वाले इसुदान गढ़वी ने एक बार फिर किसानों की जमीन बचाने के मुद्दे पर साणंद के किसानों के आंदोलन में भाग लिया
- साणंद के डरण गांव में किसानों के खेतों में बिना पूछे ड्रेनेज लाइन डाली जा रही है: इसुदान गढ़वी
- कंपनियों के वेस्ट पानी की निकासी के लिए 10 किलोमीटर लंबी 1000 बीघा उपजाऊ जमीन में ड्रेनेज लाइन डाली जा रही है: इसुदान गढ़वी
- किसानों ने मांग की कि ड्रेनेज लाइन नहर के किनारे से डाली जाए, लेकिन सरकार सुनने को तैयार नहीं है: इसुदान गढ़वी
- अगर यह ड्रेनेज लाइन डाली गई तो किसानों को जमीन का उचित मूल्य भी नहीं मिलेगा: इसुदान गढ़वी
- नौ दिनों से किसान आंदोलन पर हैं, फिर भी भाजपा के विधायक या सांसद दिखाई नहीं दे रहे हैं: इसुदान गढ़वी
- भाजपा सरकार फसल बीमा, खाद या बीज नहीं देती, उचित मूल्य नहीं देती, अब मां समान जमीन पर सरकार जेसीबी चला रही है: इसुदान गढ़वी
- सरकार किसानों की बची हुई जमीन पर जेसीबी चलाकर कब्जा करने की कोशिश कर रही है: इसुदान गढ़वी
- आने वाले समय में जो भी तय होगा, उसके अनुसार एक किसान पुत्र के रूप में तथा पूरी AAP के साथ मिलकर आंदोलन में अपना योगदान देंगे: इसुदान गढ़वी

अहमदाबाद/गुजरातः आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और किसानों के अधिकारों के लिए हमेशा आवाज उठाने वाले किसानों के मसीहा इसुदान गढ़वी आज साणंद के डरण गांव पहुंचे। यहां किसानों के पानी के मुद्दों और उद्योगपतियों को फायदा पहुंचाने के लिए किसानों के साथ हो रहे अन्याय के विषय पर इसुदान गढ़वी ने किसानों से बातचीत की। इस अवसर पर 'आप' नेता इसुदान गढ़वी ने कहा कि आज साणंद के डरण गांव में दस किलोमीटर लंबी ड्रेनेज लाइन डाली जा रही है। किसानों से पूछे बिना, उनकी कृषि भूमि पर जबरन कंपनियों का वेस्ट पानी निकालने के लिए यह लाइन डाली जा रही है। किसानों का कहना है कि यह लाइन नहर के किनारे से निकाली जाए, लेकिन ऐसा करने के बजाय किसानों की उपजाऊ जमीन, लगभग एक हजार बीघा भूमि से यह लाइन निकाली जा रही है। इसके कारण 7/12 के रिकॉर्ड में भी इस ड्रेनेज लाइन की एंट्री हो जाएगी, जिससे किसानों को अपनी जमीन का पूरा मूल्य भी नहीं मिलेगा। उन्होंने आगे कहा कि इस मुद्दे पर किसान पिछले कई दिनों से विरोध कर रहे हैं, फिर भी भाजपा के विधायक या सांसद यहां तक नहीं पहुंचे हैं। आज बड़ी संख्या में किसान और महिलाएं—माताएं, बहनें और बेटियां परेशान बैठी हैं। मुझे लगता है कि भाजपा सरकार फसल बीमा नहीं देती, खाद नहीं देती, बीज नहीं देती, फसल का उचित मूल्य नहीं देती और हर बात में लाइनें लगाती है। अब तो हद हो गई है कि जिस उपजाऊ जमीन पर किसान पसीना बहाता है, उसी जमीन पर भी जेसीबी (JCB) चलाकर कब्जा करने की कोशिश की जा रही है। इस अन्याय के विरोध में आज आम आदमी पार्टी ने किसानों को पूरा समर्थन दिया है। इसुदान गढ़वी ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि किसानों पर अत्याचार बंद नहीं हुआ और इस मामले में कानूनी न्याय नहीं मिला, तो आने वाले समय में आम आदमी पार्टी किसानों के अधिकारों के लिए उग्र आंदोलन करेगी, इसकी मैं गारंटी देता हूं। किसानों को संबोधित करते हुए इसुदान गढ़वी ने कहा कि आप सब एकजुट होकर लड़ाई लड़ रहे हैं। हमारी जमीन, हमारा पानी, हमारी बिजली... और अब हमारी इस अनमोल जमीन पर, किसानों की छाती पर इन लोगों ने जो जेसीबी (JCB) चलानी शुरू की है, यह तो अत्याचार की पराकाष्ठा है। जहां-जहां आंदोलन होता है, जहां-जहां किसानों के मुद्दे उठते हैं, वहां भाजपा का कोई नेता, सांसद या विधायक दिखाई भी नहीं देता। किसान जब मतदान के दिन गाड़ियों के काफिलों में भरकर मतदान करने जाते हैं, तब ये नेता कहां चले जाते हैं? हमें पता है कि जब बाजरे की फसल तैयार होती है तो पक्षी उतर आते हैं। ठीक उसी तरह चुनाव आते ही भाजपा वाले गाड़ियों के काफिलों के साथ पक्षियों की तरह उतर पड़ते हैं। जिन किसानों ने चुनाव में उन्हें जिताया, आज उन्हीं किसानों की कई बीघा जमीन से ये लोग कंपनियों का वेस्ट (दूषित) पानी निकाल रहे हैं। मुनाफा कंपनियों को मिले और पानी की निकासी के लिए हमारी जमीन इस्तेमाल हो। मैं उन अधिकारियों से कहना चाहता हूं, याद रखिए... अपनी संपत्ति की सूची बनाकर रखिए। आपमें से जो भी यहां (किसानों पर अत्याचार करने में) शामिल हैं, जिस दिन सरकार बदलेगी, उस दिन ब्याज सहित वसूली की जाएगी। आपको सड़क पर ले आएंगे। यहां कोई अच्छी सरकारी या अंग्रेजी माध्यम की स्कूल है? कोई अच्छी सरकारी अस्पताल है यहां? आप नौकरियां नहीं देते, फसल का उचित मूल्य नहीं देते, फसल बीमा नहीं देते... आपने हमसे हमारा सब कुछ लूट लिया! और अब हमारी मां समान जमीन पर बिना हमसे पूछे जेसीबी चला रहे हैं? ऐसा अत्याचार तो अंग्रेजों ने भी नहीं किया था! आज आपकी जो मांग है, उससे मैं पूरी तरह सहमत हूं। जरूरत पड़ी तो मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर भी इस विषय में कड़ी प्रस्तुति करूंगा। आज हम यहां इकट्ठा हुए हैं, तो इसका कोई न कोई समाधान निकालना ही पड़ेगा। मेरी इस सरकार और मुख्यमंत्री से भी विनम्र अपील है कि इन कंपनियों और सिंचाई विभाग के भ्रष्ट अधिकारियों की दलाली करना बंद करें!

संपादकीय

आस्था से छल

अयोध्या में राम मंदिर में भक्तों द्वारा दिए दान और कीमती सामान की हेराफेरी की घटनाओं ने देश-विदेश के रामभक्तों को विचलित किया है। कभी आमजन में कहा जाता था कि 'भगवान से डर', लेकिन पैसे की हवस देखिए कि मंदिर प्रबंधन से जुड़े चंद लोगों ने भगवान के घर में चोरी करने में कोई डर महसूस नहीं किया। ये प्रबंधन व व्यवस्था की पारदर्शिता की खोट तो है ही, मानवीय मूल्यों के पतन की पराकाष्ठा भी है कि मंदिर में चढ़ावे की देखरेख को तैनात लोग ही चोरी-चकारी में लिप्त हो जाएं। इस मामले में विपक्ष के तीखे हमले और जनाक्रोश के बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने मामले की जांच के लिए आनन-फानन में एसआईटी गठित की, रिपोर्ट राज्य सरकार को सौंपी, प्राथमिकी दर्ज की और वीरवार को प्रबंधन से जुड़े आठ कर्मचारियों की गिरफ्तारी भी हो गई। लेकिन अपने आराध्य राम के चढ़ावे की चोरी से आहत भक्तों के जख्मों पर शायद तभी मरहम लगेगी, जब दोषियों को सख्त सजा दी जाएगी। निश्चित ही यह चोरी का प्रकरण भाजपा व संघ को परेशान करने वाला है। उस राजनीतिक दल के लिये, जिसके कभी दो सांसद हुआ करते थे और राम मंदिर की मुहिम से हासिल जनसमर्थन से केंद्र व तमाम राज्यों में उसकी सरकारें बनी हैं। खासकर, भाजपा के लिए यह मुद्दा परेशानी का सबब हो सकता है क्योंकि राम जन्म भूमि वाले प्रदेश में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं। जिस मुद्दे को लेकर भाजपा राज्य की सत्ता में आती रही है, उस मुद्दे पर विपक्ष हमलावर होगा। निस्संदेह, इस प्रकरण से राम भक्तों की आस्था को गहरी चोट तो पहुंची है। सवाल राम मंदिर ट्रस्ट की नाकामी पर भी उठेंगे कि उसने समय रहते इस चोरी को क्यों नहीं पकड़ा। बेहतर होता कि दोषियों के खिलाफ ट्रस्ट की तरफ से स्वतः प्राथमिकी दर्ज करके कार्रवाई की जाती। सवाल पूछा जा सकता है कि आखिर क्यों ट्रस्ट चंदे की रकम का हिसाब-किताब विश्वसनीय तरीके से नहीं रख पाया। निश्चय ही इस प्रकरण से श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की साख भी दांव पर लगी है। वह उन भक्तों की भावनाओं की रक्षा नहीं कर पाया, जिन्होंने मंदिर निर्माण से लेकर अब तक दिल खोलकर दान दिया। जब चंदा प्रबंधन से जुड़े लोगों के घर से लाखों की नकदी बरामद हुई और चोरी के पैसे से जमीन खरीदने के आरोप सामने आए तो भक्तों की आस्था पर आंच आना स्वाभाविक ही है। आरोप सिर्फ नकदी के हेरफेर के ही नहीं लगे बल्कि कीमती गहनों को खुर्दबुर्द करने के भी लगे। वहीं प्राण-प्रतिष्ठा समारोह के दौरान दान में मिली चांदी की छड़ों के गायब होने का भी आरोप है। बहरहाल, 2027 के यूपी विधानसभा चुनावों से कुछ महीने पहले सामने आए इस विवाद ने प्रदेश में राजनीतिक हलचल मचा दी है। विपक्ष जहां दोषियों पर समय रहते कार्रवाई न करने का आरोप लगा रहा है, वहीं भाजपा इन आरोपों को अयोध्या को बदनाम करने और धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने की कोशिश बता रही है। वहीं दूसरी ओर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने धैर्य रखने की अपील करते हुए कहा कि जिन भक्तों ने मंदिर निर्माण के लिए पांच सौ साल तक इंतजार किया, उन्हें एसआईटी जांच अंतिम निष्कर्ष तक पहुंचने का इंतजार करना चाहिए। उनकी दलील है कि इस शर्मनाक मामले की तह तक जाने के लिये एक पारदर्शी और समय-सीमा के भीतर होने वाली जांच बेहद जरूरी है। वहीं दूसरी ओर विपक्षी दल चंदे के रिकॉर्ड को सार्वजनिक करने और स्वतंत्र ऑडिट की मांग कर रहे हैं। उनका कहना है कि लोगों के दान और धार्मिक आस्था से जुड़े मामले में कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए। निश्चित रूप से यह प्रकरण देश के बड़े धार्मिक संस्थानों में चंदे के प्रबंधन में पारदर्शिता व सतर्कता की मांग करता है। चंदे का नियमित ऑडिट किया जाना, तकनीक आधारित प्रबंधन, डिजिटल ट्रैकिंग और स्वतंत्र निगरानी वाले आधुनिक सिस्टम की जरूरत को दर्शाता है। निस्संदेह, राम मंदिर भारत व विदेशों में बसे करोड़ों श्रद्धालुओं की आकांक्षा का प्रतीक है। श्रद्धालुओं का भरोसा बनाये रखने के लिये हर आक्षेप की पारदर्शिता से जांच जरूरी है।

नई भाजपा के रोल मॉडल हैं योगी, हेमंत और शुभेंदु!

> "भाजपा का आज तक का ट्रैक हिंदुत्व का वैचारिक और राजनीतिक इस्तेमाल कर सत्ता में आने का रहा है। देश की राजनीति में चल रहे विमर्श में भाजपा बड़ी चतुराई से इस कार्ड का इस्तेमाल तो करती थी, किंतु उसके नेतृत्व में इसे लेकर एक हिचक बनी रहती थी। वो हिचक अटल जी से लेकर आडवानी तक हर दौर में दिखी है।

उत्तर प्रदेश एक ऐसे मुख्यमंत्री से रूबरू है, जिसे राजनीति के मैदान में बहुत गंभीरता से नहीं लिया जा रहा था। उनके बारे में यह ख्यात था कि वे एक खास वर्ग की राजनीति करते हैं और भारतीय जनता पार्टी भी उनकी राजनीतिक शैली से पूरी तरह सहमत नहीं है। लेकिन उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने जिस तरह अपनी पकड़ बनाई है और देश में एक अलग माडल खड़ा दिया है, वह सर्वत्र चर्चा का विषय है। इससे यह भी साबित हो रहा है कि 'अपनी राजनीति' के प्रति भाजपा का आत्मदैन्य कम हो रहा है। वहीं असम में हेमंत विश्वशर्मा उम्मीदों का चेहरा बनकर उभरे हैं, असम में तीसरी बार सरकार बनाकर भाजपा ने पूर्वोत्तर में इतिहास रच दिया है। इसी तरह गृहमंत्री अमित शाह की रणनीति से पश्चिम बंगाल की विजय ऐतिहासिक कही जा रही है और वहां बने मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के ताबड़तोड़ फैसलों ने जनविश्वास की हिलोरें पैदा की हैं। जड़ता को तोड़कर एक नई उम्मीद बनी है। केंद्रीय राजनीति में नरेंद्र मोदी और अमित शाह के आगमन ने भारतीय राजनीति के परिदृश्य को बदलकर रख दिया है। भाजपा का आज तक का ट्रैक हिंदुत्व का वैचारिक और राजनीतिक इस्तेमाल कर सत्ता में आने का रहा है। देश की राजनीति में चल रहे विमर्श में भाजपा बड़ी चतुराई से इस कार्ड का इस्तेमाल तो करती थी, किंतु उसके नेतृत्व में इसे लेकर एक हिचक बनी रहती थी। वो हिचक अटल जी से लेकर आडवानी तक हर दौर में दिखी है। भाजपा का हर नेता सत्ता पाने के बाद यह साबित करने में लगा रहता है वह अन्य दलों के नेताओं के कम 'सेकुलर' नहीं है। उत्तर प्रदेश की 'आदित्यनाथ परिघटना' दरअसल भाजपा की वैचारिक हीनग्रंथि से मुक्ति को

स्थापित करती नजर आती है। नरेंद्र मोदी के राज्यारोहण के बाद योगी आदित्यनाथ का उदय भारतीय राजनीति में एक अलग किस्म की राजनीति की स्वीकृति का प्रतीक है। एक धर्मप्राण देश में धार्मिक प्रतीकों, भगवा रंग, सन्यासियों के प्रति जैसी विरक्ति मुख्यधारा की राजनीति में दिखती थी, वह अन्यत्र दुर्लभ है। भाजपा जैसे दल भी इस सेकुलर विकार से कम ग्रस्त न थे। धर्म और धर्माचार्यों का इस्तेमाल, धार्मिक आस्था का दोहन और सत्ता पाते ही सभी धार्मिक प्रतीकों से मुक्ति लेकर सारी राजनीति सिर्फ तुष्टीकरण में लग जाती थी। प्रधानमंत्रियों समेत जाने कितने सत्ताधीशों के ताज जामा मस्जिद में झुके होगें, लेकिन हिंदुत्व के प्रति उनकी हिचक निरंतर थी।

यह भी कम आश्चर्यजनक नहीं की एक समय में दीनदयाल जी उदार थे, तो अटलजी और बलराज मधोक अपनी वक्रता के चलते उग्र नेता माने जाते थे। अटलजी का दौर आया तो लालकृष्ण आडवाणी उग्र कहे जाने लगे, फिर एक समय ऐसा भी आया जब आडवानी उदार हो गए और नरेंद्र मोदी उग्र मान जाने लगे। आज की व्याख्याएं सुनें- नरेंद्र मोदी उदार हो गए हैं और योगी आदित्यनाथ और गृहमंत्री अमित शाह उग्र माने जाने लगे हैं। अब तो असम के मुख्यमंत्री हेमंत विश्वशर्मा और पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी भी आदित्यनाथ की परंपरा के मुख्यमंत्री कहे जाने लगे हैं।

यह मीडिया, बौद्धिकों की अपनी रोज बनाई जाती व्याख्याएं हैं। लेकिन सच यह है कि अटल, मधोक, आडवानी, मोदी, अमित शाह या आदित्यनाथ, हेमंत विश्वशर्मा और शुभेंदु अधिकारी कोई अलग-अलग लोग नहीं है। एक विचार के प्रति समर्पित राष्ट्रनायकों की सूची है यह। इसमें कोई कम जा ज्यादा उदार या कठोर नहीं है। किंतु भारतीय राजनीति का विमर्श ऐसा है जिसमें वास्तविकता से अधिक ड्रामे पर भरोसा है। भारतीय राजनेता की मजबूरी है कि वह टोपी पहने, रोजा भले न रखे किंतु इफ्तार की दावतें दे। आप ध्यान दें सरकारी स्तर पर यह प्रहसन लंबे समय से जारी रहा है। भाजपा भी इसी राजनीतिक क्षेत्र में काम करती है। उसमें भी इस तरह के रोग हैं। वह भी राष्ट्रनीति के साथ थोड़े तुष्टिकरण को गलत नहीं मानती। जबकि उसका अपना नारा रहा है सबको न्याय, तुष्टिकरण किसी का नहीं। उसका एक नारा यह भी रहा है-"राम, रोटी और इंसाफ।"

लंबे समय के बाद भाजपा में अपनी वैचारिक लाइन को लेकर गर्व का बोध दिख रहा है। असरे बाद वे भारतीय राजनीति के सेकुलर संक्रमण से मुक्त होकर अपनी वैचारिक भूमि पर गरिमा के साथ खड़े दिख रहे हैं। समझौतों और आत्मसमर्पण की मुद्राओं के बजाए उनमें अपनी वैचारिक भूमि के प्रति हीनताग्रंथि के भाव कम हुए हैं। अब वे अन्य दलों की नकल के बजाए एक वैचारिक लाइन लेते हुए दिख रहे हैं। दिखावटी सेकुलरिज्म के बजाए वास्तविक राष्ट्रीयता के उनमें दर्शन हो रहे हैं। मोदी जब एक सौ चालीस करोड़ हिंदुस्तानियों की बात करते हैं तो बात अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक से ऊपर चली जाती है। यहां देश सम्मानित होता है, एक नई राजनीति का प्रारंभ दिखता है। एक भगवाधारी संन्यासी जब मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठता है तो वह एक नया संदेश देता है। वह संदेश त्याग का है, परिवारवाद के विरोध का है, तुष्टिकरण के विरोध का है, सबको न्याय का है।

आजादी के बाद के सत्तर सालों में देश की राजनीति का विमर्श भारतीयता और उसकी जड़ों की तरफ लौटने के बजाए घोर पश्चिमी और वामपंथी रह गया था। जबकि बेहतर होता कि आजादी के बाद हम अपनी ज्ञान परंपरा की और लौटते और अपनी जड़ों को मजबूत बनाते। किंतु सत्ता, शिक्षा, समाज और राजनीति में हमने पश्चिमी तो, कहीं वामपंथी विचारों के आधार पर चीजें खड़ी कीं। इसके कारण हमारा अपने समाज से ही रिश्ता कटता चला गया। सत्ता और जनता की दूरी और बढ़ गयी। सत्ता दाता बन बैठी और जनता याचक। सेवक मालिक बन गए। ऐसे में लोकतंत्र एक छद्म लोकतंत्र बन गया। यह लोकतंत्र की विफलता ही है कि हम सत्तर साल के बाद सड़कें बना रहे हैं। यह लोकतंत्र की विफलता ही है कि हमारे अपने नौजवानों ने भारतीय राज्य के खिलाफ बंदूकें उठा रखी थीं। गृहमंत्री अमित शाह के दृढ़संकल्प की बदौलत आज माओवादी आतंक का अंत भी हमने देखा। पिछले सत्तर सालों में लोकतंत्र की विफलता की ये कहानियां सर्वत्र बिखरी पड़ी हैं। राजनीतिक तंत्र के प्रति उठा भरोसा भी साधारण नहीं था। आज ऐसा लगता है कि राजनीति से कुछ हो सकता है। मोदी,शाह, आदित्यनाथ भरोसे के प्रतीक बन गए। इसका मतलब यह भी है कि ये कुछ कह रहे हैं तो करेंगें भी।

नरेंद्र मोदी, अमित शाह, आदित्यनाथ देश की इन्हीं उम्मीदों के चेहरे हैं। तीनों अंग्रेजी नहीं बोलते। तीनों जन-मन-गण के प्रतिनिधि हैं। यह भारतीय राजनीति का बदलता हुआ चेहरा है। क्या सच में भारत खुद को पहचान रहा है ? वह जातियों, पंथों, क्षेत्रों की पहचान से अलग एक बड़ी पहचान से जुड़ रहा है- वह पहचान है भारतीय होना, राष्ट्रीय होना। एक समय में राजनीति हमें नाउम्मीद करती हुयी नजर आती थी। बदले समय में वह उम्मीद जगा रही है। कुछ चेहरे ऐसे हैं जो भरोसा जगाते हैं। एक आकांक्षावान भारत बनता हुआ दिखता है। यह आकांक्षाएं राजनीति दलों के एजेंडे से जुड़ पाएं तो देश जल्दी और बेहतर बनेगा। राजनीतिक विमर्श और जनविमर्श को साथ लाने की कवायद हमें करनी ही होगी। जल्दी बहुत जल्दी। यह जितना और जितना जल्दी होगा भारत अपने भाग्य पर इठलाता दिखेगा।

प्रेरणा

चंद्रशेखर आज़ाद: त्याग, बुद्धिमत्ता और राष्ट्रभक्ति का अद्वितीय संकल्प

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास उन वीर सपूतों के बलिदान, साहस और अदम्य राष्ट्रप्रेम से भरा हुआ है, जिन्होंने अपने सुख, परिवार, भविष्य और यहाँ तक कि अपने प्राणों की भी परवाह नहीं की। इन महान क्रांतिकारियों में चंद्रशेखर आज़ाद का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। वे केवल एक निर्भीक योद्धा ही नहीं थे, बल्कि दूरदर्शी रणनीतिकार, तेजस्वी विचारक और राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानने वाले महान देशभक्त भी थे। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि सच्चा देशप्रेम केवल हथियार उठाने तक सीमित नहीं होता, बल्कि हर परिस्थिति में राष्ट्रहित को सर्वोच्च मानने का नाम ही सच्ची देशभक्ति है।

चंद्रशेखर आज़ाद का जन्म ऐसे समय में हुआ जब भारत अंग्रेजी शासन की गुलामी में जकड़ा हुआ था। देश का प्रत्येक कोना विदेशी अत्याचारों से कराह रहा था। लाखों भारतीय स्वतंत्रता का सपना देख रहे थे, लेकिन उस सपने को साकार करने के लिए साहस, संगठन और संसाधनों की आवश्यकता थी। आज़ाद ने किशोरावस्था में ही यह संकल्प ले लिया था कि उनका जीवन केवल भारत माता की स्वतंत्रता के लिए समर्पित रहेगा। उन्होंने स्वयं से वचन लिया कि अंग्रेज उन्हें कभी जीवित नहीं पकड़ पाएंगे, और जीवन की अंतिम सांस तक उन्होंने इस प्रतिज्ञा का पालन किया।

क्रांतिकारी आंदोलन चलाना केवल साहस का काम नहीं था। इसके लिए धन, हथियार, गुप्त ठिकाने, संदेशवाहक और विश्वसनीय साथियों की आवश्यकता पड़ती थी। उस समय अधिकांश क्रांतिकारी अत्यंत साधारण परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करते थे। कई बार भोजन तक का प्रबंध करना कठिन हो जाता था, लेकिन फिर भी उनका मनोबल कभी कमजोर नहीं पड़ा। ऐसे समय में गाज़ीपुर के एक मठ से जुड़ी एक घटना चंद्रशेखर आज़ाद की अद्भुत दूरदर्शिता और राष्ट्र के प्रति समर्पण को उजागर करती है।

उन दिनों क्रांतिकारी संगठन से जुड़े रामकृष्ण खत्री को गाज़ीपुर के एक प्रतिष्ठित महंत ने अपनी चिंता बताई। महंत वृद्ध और अस्वस्थ थे। उन्हें अपने मठ की व्यवस्था संभालने के लिए एक ईमानदार, सच्चरित्र और योग्य युवक की तलाश थी, जिसे वे अपना शिष्य बनाकर संपूर्ण मठ का उत्तरदायित्व सौंप सकें। रामकृष्ण खत्री ने इस प्रस्ताव की चर्चा अपने क्रांतिकारी साथियों से की। सामान्य रूप से यह प्रस्ताव किसी भी क्रांतिकारी के लिए आकर्षक नहीं था, क्योंकि इसका अर्थ था सांसारिक जीवन छोड़कर मठ में रहना, साधु बनना, सेवा करना और सार्वजनिक जीवन से लगभग दूर हो जाना।

लेकिन जब यह बात चंद्रशेखर आज़ाद के सामने आई, तो उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के स्वयं को इस कार्य के लिए प्रस्तुत कर दिया। यह निर्णय सुनकर रामकृष्ण खत्री आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने आज़ाद से पूछा कि क्या वे सचमुच साधु बनने के लिए तैयार हैं। उन्होंने समझाया कि इसके लिए सिर मुंडवाना पड़ेगा, धार्मिक दीक्षा लेनी होगी, मठ की सेवा करनी होगी और दिन-रात वहीं रहना पड़ेगा। यह जीवन किसी क्रांतिकारी की सक्रिय भूमिका से बिल्कुल अलग था।

चंद्रशेखर आज़ाद का उत्तर उनकी राष्ट्रभक्ति की गहराई को प्रकट करता है। उन्होंने शांत स्वर में कहा कि मठ के पास पर्याप्त संपत्ति है और यदि किसी प्रकार वह संपत्ति क्रांतिकारी संगठन के काम आ सके, तो उससे स्वतंत्रता आंदोलन को नई शक्ति मिलेगी। उनका मानना था कि धन केवल व्यक्तिगत सुख का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्रसेवा का भी एक प्रभावी माध्यम हो सकता है। यदि संगठन आर्थिक रूप से मजबूत होगा, तो हथियार खरीदे जा सकेंगे, नए युवाओं को जोड़ा जा सकेगा और स्वतंत्रता संग्राम को अधिक गति मिलेगी।

यह उत्तर केवल एक रणनीति नहीं था, बल्कि उस त्याग की पराकाष्ठा थी जिसमें व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन, पहचान और इच्छाओं तक का बलिदान करने के लिए तैयार हो जाता है। आज़ाद के लिए साधु बनना कोई धार्मिक महत्वाकांक्षा नहीं थी, बल्कि भारत माता की सेवा का एक नया मार्ग था। वे यह भली-भांति जानते थे कि स्वतंत्रता की लड़ाई केवल रणभूमि में नहीं, बल्कि बुद्धिमत्ता, धैर्य और योजना के माध्यम से भी लड़ी जाती है। रामकृष्ण खत्री ने जब उनसे पूछा कि महंत के सामने उनका परिचय किस रूप में कराया जाए, तब आज़ाद ने सहज भाव से उत्तर दिया कि उन्हें एक कवि के रूप में प्रस्तुत कर दिया जाए। यह उत्तर सुनकर खत्री जी मुस्कुरा दिए, लेकिन उन्होंने अगला प्रश्न भी पूछ लिया—यदि महंत कविता सुनाने के लिए कह देंगे तो क्या होगा? चंद्रशेखर आज़ाद का उत्तर उनके व्यक्तित्व के एक और महत्वपूर्ण पक्ष को उजागर करता है। उन्होंने कहा कि यदि देश की स्वतंत्रता के लिए वे क्रांतिकारी बन सकते हैं, तो आवश्यकता पड़ने पर कवि भी बन सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्यकार होकर क्या यह भूल जाना चाहिए कि कलम तलवार से भी अधिक शक्तिशाली होती है? यह केवल एक संवाद नहीं था, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की उस विचारधारा का सार था जिसमें शब्द और शस्त्र दोनों को समान महत्व दिया गया।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्य ने जनजागरण का अद्भुत कार्य किया। कविताएँ, गीत, लेख और भाषण लाखों लोगों के भीतर देशभक्ति की भावना जगाते थे। दूसरी ओर क्रांतिकारी संगठन अन्याय के विरुद्ध प्रत्यक्ष संघर्ष करते थे। चंद्रशेखर आज़ाद समझते थे कि यदि विचारों की शक्ति कमजोर पड़ जाए, तो हथियारों की शक्ति भी अधिक समय तक प्रभावी नहीं रह सकती। इसलिए उन्होंने कलम और तलवार दोनों को राष्ट्रनिर्माण के समान रूप से आवश्यक साधन माना।

इस घटना से यह भी स्पष्ट होता है कि महान नेता परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को बदलने की क्षमता रखते हैं। वे किसी एक पहचान में बंधकर नहीं रहते। आवश्यकता पड़ने पर वे सैनिक बनते हैं, रणनीतिकार बनते हैं, शिक्षक बनते हैं, लेखक बनते हैं और यदि राष्ट्रहित में आवश्यक हो तो साधु बनने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। चंद्रशेखर आज़ाद का व्यक्तित्व इसी बहुआयामी नेतृत्व का प्रतीक था।

आज के समय में जब राष्ट्रसेवा को अक्सर केवल सीमाओं की रक्षा या राजनीति तक सीमित समझ लिया जाता है, तब चंद्रशेखर आज़ाद का जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची देशभक्ति हर क्षेत्र में संभव है। ईमानदारी से किया गया कार्य, समाज के प्रति उत्तरदायित्व, शिक्षा का प्रसार, नैतिक मूल्यों का पालन और राष्ट्रहित को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर रखना—ये सभी देशसेवा के ही रूप हैं।

स्मार्टफोन की चमकीली दुनिया और बेबस होते माता-पिता

रात के एक या दो बजे का समय है। पूरे घर में अंधेरा पसरा है, सिवाय एक बेडरूम के दरवाजे के नीचे से छनकर आती मोबाइल की उस धुंधली नीली रोशनी के। आधी रात को माँ की आँख खुलती है। वह पानी पीने के लिए उठती है और सहज भाव से अपने बच्चे के कमरे में झांकती है। वहाँ वो बिस्तर पे बैठा हैं-हाथ में मोबाइल है और कानों में हेडफोन मजबूती से जड़े हैं। स्क्रीन पर कुछ न कुछ चल रहा है; कोई गेम पूरे जोर से चल रहा है। वक्त का होश तो जैसे पूरी तरह खो चुका है।

"तुम अभी तक सोए नहीं?" स्वाभाविक रूप से एक थका हुआ, चिंतित सवाल हवा में तैरता है।

"बस मम्मा, थोड़ा सा बाकी है। अगले पाँच-दस मिनट में पक्का सो रहा हूँ," उधर से रटा-रटाया जवाब आता है।

वे दस मिनट कब दो घंटों में बदल जाते हैं, कोई नहीं जानता। आखिरकार नींद आ ही जाती है, पर कब? इसका सटीक हिसाब किसी के पास नहीं होता। आज देश-दुनिया के अधिकांश घरों में हर रात यही कहानी दोहराई जा रही है।

अगले दिन फिर वही चक्र चलता है: दिन के ग्यारह या बारह बजे तक सोए रहना, और कई बार टोकने के बाद ही बिस्तर छोड़ना। जब वे आखिरकार उठते हैं, तो एक हाथ में फोन और दूसरे हाथ में कॉफी का कप होता है। शरीर तो जाग जाता है, लेकिन दिन की जो एक प्राकृतिक लय होती है, वह पूरी तरह दम तोड़ चुकी होती है। रात भर जागना, दोपहर में आँखें खोलना, और भोर होने तक लैपटॉप या मोबाइल की स्क्रीन को टकटकी लगाकर ताकते रहना ही अब 'नया नॉर्मल' बन गया है।

समय बदलता है, तकनीक आगे बढ़ती है और जीवनशैली उसके अनुसार ढल जाती है। यहाँ तक तो सब ठीक है। लेकिन मानव शरीर की बुनियादी जरूरतें नहीं बदलतीं। मानवीय जिस्म को शारीरिक आराम की दरकार होती है। मन को गहरी, सुकून भरी नींद मिलनी चाहिए। आँखों को अंधेरे की और दिमाग को खुद को दोबारा तरोताजा व व्यवस्थित करने के लिए शांत समय की आवश्यकता होती है।

मगर आज की पीढ़ी मानो अपने ही बायोलॉजी से युद्ध लड़ रही है। उन्हें शायद यह मुगालता हो गया है कि ढेर सारी तकनीक और डेटा के दम पर वे इंसानी शरीर के नियमों को मात दे सकते हैं और अपनी जैविक घड़ी (बायो-रिदम) को ठेंगा दिखा सकते हैं।

जब हम बच्चे थे, तो गर्मियों की छुट्टियों की एक अलग ही जादुई दुनिया हुआ करती थी। हम खुले आसमान के नीचे छत पर सोते थे, टिमटिमाते तारों को निहारते हुए परिवार से बतियाते थे। हम सूरज उगने से पहले उठ जाते थे, जहाँ पक्षियों की चहचहाहट और भोर की ताजी हवा एक नए उत्साह के साथ हमारा स्वागत करती थी। हमारे दिन खेलने, किताबें पढ़ने, गलियों में घूमने और आपस में बातें करने में बीतते थे।

आज, कई बच्चे भूल चुके हैं कि सूर्योदय असल में कैसा दिखता है। वे सुबह की उस शांत लहर और चिड़ियों के चहकने के सीधे गवाह ही नहीं बन पाते। इस बदलाव का दुख सिर्फ पुरानी यादों का रोना नहीं है; बल्कि यह उनके स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और आने वाले कल को लेकर एक सच्ची और गहरी चिंता है।

आज के किशोरों ने वक्त के पहिये को ही उलट दिया है-रात को दिन और दिन को रात बना डाला है। माता-पिता होने के नाते, हम मूकदर्शक बनकर यह सब देखते हैं। शुरुआत में हम टोकते हैं। प्यार से समझाते हैं। फिर, हम इसके बुरे नतीजों से आगाह करने की कोशिश करते हैं। अपनी बातें बार-बार दोहराते हैं। कभी गुस्सा फूटता है, तो कभी हम मिन्नतें करने लगते हैं। लेकिन आज के बच्चों के पास पलटवार करने के लिए पहले से रिकॉर्डेड जवाबों का एक पूरा तरकश तैयार रहता है:

"हमें सब पता है।"

"आप फालतू में चिंता मत करो।"

"आजकल सब लोग ऐसा ही करते हैं।"

"हमारी पीढ़ी की जिंदगी आपसे अलग है।"

इन दुत्कार भरे जवाबों को रोज-रोज सुनकर माता-पिता आखिरकार घुटने टेक देते हैं और चुप हो जाते हैं। मगर उनका मन शांत नहीं होता। वे अपने तजुर्बे से जानते हैं कि अगर आप अपने शरीर के साथ खिलवाड़ करेंगे, तो देर-सबेर आपको इसकी भारी कीमत चुकानी ही पड़ेगी। बीस या पच्चीस साल की उम्र में इंसान खुद को अजेय समझता है, लगता है कुछ नहीं होगा। लेकिन नींद की यह लगातार कमी, बेपटरी हो चुकी दिनचर्या, शारीरिक मेहनत से दूरी और स्क्रीन के सामने घंटों गुजारने के ये छोटे-छोटे बीज जो चुपचाप बोए जा रहे हैं; वक्त के साथ, वे पनपते हैं और एक गंभीर शक्ल अख्तियार कर लेते हैं। स्वभाव में चिड़चिड़ापन घर कर जाता है। एकाग्रता टूटने लगती है। जीवन का उत्साह और ऊर्जा फीकी पड़ जाती है। अपनों से बातचीत का दायरा सिमटने लगता है, आत्मविश्वास डगमगा जाता है, और सबसे दुखद बात यह है कि जिंदगी की छोटी-छोटी मासूम खुशियाँ काफूर होने लगती हैं।

फिर भी, माता-पिता के लिए सबसे बड़ी त्रासदी इन नतीजों को देखना नहीं है; बल्कि यह जानलेवा अहसास है कि वे अब चाहकर भी अपने बच्चों के दिल तक नहीं पहुँच पा रहे हैं, उनसे संवाद के सारे रास्ते बंद हो चुके हैं।

हर पीढ़ी को लगता है कि उनके माता-पिता उन्हें समझ नहीं पाते। लेकिन सच तो यह है कि माता-पिता अपनी पूरी जिंदगी ही बच्चों को समझने के नाम कर देते हैं। वे एक अबोध बच्चे के रोने की वजह पहचान लेते हैं। वे स्कूल के दिनों की अनकही उलझनों और घबराहट को भांप लेते हैं। वे बच्चे की पहली नाकामी का दर्द खुद महसूस करते हैं और उनके पहले प्यार की धड़कन को पहचानते हैं। यहाँ तक कि जब बच्चे पूरी तरह खामोश होते हैं, तब भी माता-पिता सिर्फ उनका चेहरा देखकर उनके भीतर का हाल पढ़ लेते हैं।

फिर एक दिन ऐसा आता है जब वही बच्चे बड़े हो जाते हैं, और सीधे आँखों में आँखें डालकर कह देते हैं, "आप कुछ नहीं समझते !"

यह एक जुमला माता-पिता के कलेजे को सबसे गहरा घाव देता है। माता-पिता अपने बच्चों के दुश्मन नहीं होते; वे तो उनके सपनों के सबसे सच्चे और पहले गवाह होते हैं। वे उनकी कामयाबी के लिए सबसे पहले दुआ मांगते हैं और जब बच्चा नाकाम होता है, तो अंदर से टूटने वाले भी वही पहले शख्स होते हैं।

अभियान

जब हृदय में भगवान बस जाते हैं, तब जीवन स्वयं एक तीर्थ बन जाता है

मनुष्य का जीवन अनेक इच्छाओं, संघर्षों, सफलताओं और असफलताओं का संगम है। जन्म से लेकर मृत्यु तक वह सुख की खोज में निरंतर दौड़ता रहता है। कभी धन में सुख खोजता है, कभी पद में, कभी संबंधों में और कभी प्रसिद्धि में। लेकिन जितना वह बाहरी संसार में भटकता है, उतना ही भीतर का खालीपन बढ़ता जाता है। यही वह क्षण होता है जब आत्मा किसी ऐसे सहारे की तलाश करती है जो कभी साथ न छोड़े, जो हर परिस्थिति में स्थिर रहे और जो जीवन को केवल सफलता ही नहीं, बल्कि शांति भी दे। उस दिव्य सहारे का नाम है—भक्ति। भक्ति केवल पूजा, आरती, मंदिर या तीर्थयात्रा तक सीमित नहीं है। भक्ति वह अनुभूति है जिसमें मनुष्य का प्रत्येक विचार, प्रत्येक कर्म और प्रत्येक श्वास भगवान की स्मृति से भर जाता है। जब हृदय में ईश्वर का प्रेम जागता है, तब संसार वैसा ही रहता है, लेकिन उसे देखने की दृष्टि पूरी तरह बदल जाती है।

भक्ति का वास्तविक अर्थ भगवान को पाना नहीं, बल्कि स्वयं को भगवान के योग्य बनाना है। संसार में अधिकांश लोग ईश्वर को इसलिए याद करते हैं कि उनकी इच्छाएँ पूरी हो जाएँ, कष्ट दूर हो जाएँ या जीवन में सफलता मिल जाए। यह भी श्रद्धा का एक प्रारंभिक रूप है, किंतु सच्ची भक्ति इससे कहीं आगे है। वास्तविक भक्त भगवान से वस्तुएँ नहीं माँगता, बल्कि भगवान को ही माँगता है। वह कहता है—"प्रभु! मुझे इतना बल दीजिए कि मैं आपकी इच्छा को स्वीकार कर सकूँ। मेरा जीवन आपके मार्ग पर चल सके।" यही भाव भक्ति को साधारण आस्था से महान आध्यात्मिक साधना में बदल देता है।

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि यहाँ भक्ति को किसी वर्ग, जाति, भाषा या विद्वत्ता से नहीं जोड़ा गया। इतिहास गवाह है कि भगवान ने राजमहलों से अधिक प्रेम उन सरल हृदय भक्तों से किया, जिनके पास देने के लिए केवल प्रेम था। शबरी के बेर, सुदामा की मुट्ठी भर चावल, विदुर का सादा भोजन और मीरा का समर्पण आज भी इसलिए अमर हैं क्योंकि उनमें दिखावा नहीं, निष्कपट प्रेम था। ईश्वर को सोने-चाँदी के सिंहासन की अपेक्षा निर्मल हृदय अधिक प्रिय है। जहाँ छल नहीं होता, वहीं भक्ति जन्म लेती है।

भक्ति मनुष्य के भीतर चल रहे निरंतर संघर्ष को समाप्त कर देती है। सामान्य व्यक्ति हर समय भविष्य की चिंता और अतीत के पश्चाताप में उलझा रहता है। वह सोचता है कि यदि यह मिल जाए तो सुख मिलेगा, यदि वह चला गया तो जीवन समाप्त हो जाएगा। लेकिन भक्त का दृष्टिकोण अलग होता है। वह जानता है कि जो कुछ भी हो रहा है, वह ईश्वर की योजना का भाग है। इसलिए वह प्रयास तो पूरी निष्ठा से करता है, पर परिणाम को भगवान के चरणों में समर्पित कर देता है। यही समर्पण उसे मानसिक शांति देता है। यही कारण है कि अनेक संत अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी मुस्कुराते रहे। उनके पास बाहरी वैभव नहीं था, लेकिन भीतर भगवान का प्रेम था।

आज का युग सुविधाओं का युग है, लेकिन शांति का नहीं। विज्ञान ने जीवन को सरल बनाया है, पर मन को शांत नहीं कर पाया। संचार के साधन बढ़े हैं, लेकिन हृदयों के बीच की दूरी भी बढ़ गई है। ऐसे समय में भक्ति केवल धार्मिक विषय नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक आवश्यकता बन गई है। जब मनुष्य प्रतिदिन कुछ समय भगवान का स्मरण करता है, उनका नाम जपता है और अपने मन को उनकी ओर मोड़ता है, तब धीरे-धीरे उसके भीतर का तनाव कम होने लगता है। उसे अनुभव होने लगता है कि जीवन केवल संघर्ष नहीं, बल्कि ईश्वर का दिया हुआ एक सुंदर अवसर भी है।

भक्ति का सबसे बड़ा चमत्कार यह है कि वह मनुष्य के स्वभाव को बदल देती है। क्रोध धीरे-धीरे करुणा में बदलने लगता है, अहंकार विनम्रता में परिवर्तित हो जाता है, लोभ संतोष का रूप लेने लगता है और भय विश्वास में बदल जाता है। यह परिवर्तन किसी बाहरी नियम से नहीं, बल्कि भीतर जागे प्रेम से होता है। जिस प्रकार सूर्य के निकलते ही अंधकार अपने आप समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार हृदय में भगवान का प्रेम जागने पर नकारात्मक भावनाएँ स्वतः कम होने लगती हैं।

सच्ची भक्ति कभी भागने की शिक्षा नहीं देती। वह संसार छोड़ने का नहीं, बल्कि संसार में रहते हुए भगवान को याद रखने का मार्ग दिखाती है। एक किसान खेत जोतते हुए भी भक्त हो सकता है, एक शिक्षक पढ़ाते हुए भी भक्त हो सकता है, एक व्यापारी व्यापार करते हुए भी भक्त हो सकता है और एक गृहिणी परिवार की सेवा करते हुए भी भगवान की उपासना कर सकती है। जब प्रत्येक कर्म ईश्वर को समर्पित हो जाता है, तब पूरा जीवन ही पूजा बन जाता है। यही कारण है कि श्रीकृष्ण ने कर्म और भक्ति का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत किया। उन्होंने सिखाया कि अपने कर्तव्य का पालन करते हुए भी मन भगवान में स्थिर रखा जा सकता है।

भक्ति केवल शब्दों से नहीं, व्यवहार से प्रकट होती है। यदि कोई व्यक्ति दिनभर पूजा करे लेकिन दूसरों के साथ कठोर व्यवहार करे, तो उसकी साधना अधूरी है। दूसरी ओर यदि कोई भूखे को भोजन कराए, निराश व्यक्ति को आशा दे, दुखी के आँसू पोंछे और अपने व्यवहार से लोगों के जीवन में प्रकाश फैलाए, तो वही सच्ची भक्ति है। भगवान मूर्ति में अवश्य हैं, लेकिन वे प्रत्येक जीव के हृदय में भी विद्यमान हैं। इसलिए किसी की सेवा करना भी ईश्वर की सेवा ही है।

भक्ति का मार्ग सरल दिखाई देता है, लेकिन वास्तव में यह अहंकार त्यागने की सबसे कठिन साधना है। मनुष्य अपने ज्ञान, धन, पद और उपलब्धियों पर गर्व करता है। यही गर्व उसे भगवान से दूर ले जाता है। भक्त जानता है कि जो कुछ भी उसे मिला है, वह ईश्वर की कृपा है। इसलिए उसके भीतर कृतज्ञता रहती है। कृतज्ञ मन कभी अशांत नहीं होता। जो व्यक्ति हर दिन भगवान का धन्यवाद करता है, वह धीरे-धीरे जीवन की छोटी-छोटी खुशियों को भी पहचानने लगता है। उसे हर सुबह एक वरदान लगती है और हर साँस ईश्वर का उपहार प्रतीत होती है।

भक्ति का अर्थ यह भी नहीं कि जीवन में कभी दुःख नहीं आएगा। भक्त भी बीमार पड़ता है, उसे भी संघर्ष करना पड़ता है और वह भी कठिनाइयों का सामना करता है। अंतर केवल इतना है कि सामान्य व्यक्ति संकट में टूट जाता है, जबकि भक्त संकट में और अधिक भगवान के निकट चला जाता है। उसे विश्वास होता है कि ईश्वर जो कर रहे हैं, उसमें भी कोई न कोई कल्याण अवश्य छिपा है। यही विश्वास उसे हर परिस्थिति में स्थिर बनाए रखता है।

इतिहास के महान भक्तों का जीवन इस सत्य का प्रमाण है। मीरा को विष का प्याला मिला, लेकिन उनकी भक्ति नहीं टूटी। प्रह्लाद को अनेक यातनाएँ दी गईं, लेकिन उन्होंने भगवान का नाम नहीं छोड़ा। तुलसीदास ने विपरीत परिस्थितियों में भी रामचरितमानस की रचना की। सूरदास ने नेत्रों से संसार नहीं देखा, लेकिन अपने हृदय में श्रीकृष्ण का ऐसा दर्शन किया कि उनकी रचनाएँ आज भी लोगों की आँखें नम कर देती हैं। इन सभी संतों का जीवन बताता है कि भक्ति बाहरी परिस्थितियों पर नहीं, बल्कि भीतर के विश्वास पर आधारित होती है।

आज मनुष्य जितना बाहरी दुनिया से जुड़ गया है, उतना ही अपने भीतर से दूर होता जा रहा है। मोबाइल, इंटरनेट और भागदौड़ ने समय तो बचाया है, लेकिन मन की शांति छीन ली है। ऐसे समय में प्रतिदिन कुछ क्षण मौन होकर भगवान का स्मरण करना, उनका नाम लेना, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना और अपने जीवन को उनके चरणों में समर्पित करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह केवल धार्मिक अभ्यास नहीं, बल्कि आत्मा की आवश्यकता है।

भक्ति का सबसे सुंदर रूप तब दिखाई देता है जब मनुष्य भगवान से कोई शर्त नहीं रखता। वह यह नहीं कहता कि मेरी इच्छा पूरी होगी तभी मैं आपकी पूजा करूँगा। वह केवल इतना कहता है—"हे प्रभु! आप जो भी करें, मुझे उसे स्वीकार करने की शक्ति दें।" यही समर्पण मनुष्य को भय से मुक्त करता है। जहाँ समर्पण है, वहाँ चिंता नहीं रहती।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmdabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

गांधीनगर को देश का आदर्श 'हरियाला लोकसभा क्षेत्र' बनाने के उद्देश्य से केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री तथा सांसद श्री अमित शाह की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक आयोजित हुई

▸▸ गांधीनगर संसदीय क्षेत्र में आगामी दिनों में 308 स्थानों पर आयोजित होगा महावृक्षारोपण तथा अहमदाबाद में बनाए जाएंगे 101 ऑक्सीजन पार्क

▸▸ ग्रीन कवर बढ़ाने के लिए श्री अमित शाह के सुझाव के अनुसार सभी 101 ऑक्सीजन पार्कों का ऑनलाइन विवरण एक क्लिक पर मिलेगा, सोसाइटियों और जीआईडीसी क्षेत्रों में होगा सघन वृक्षारोपण

▸▸ वन विभाग द्वारा 60 लाख पौधे लगाकर 82 'वन कवच' बनाए जाएंगे

▸▸ गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र में 1 करोड़ 26 लाख से अधिक पेड़ लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया

▸▸ जन भागीदारी बढ़ाने के लिए टेनामेंट, रॉ-हाउस और बंगले वाले परिवारों को प्रति घर एक निःशुल्क पौधा दिया जाएगा

गांधीनगर : गांधीनगर को देश का सर्वश्रेष्ठ एवं मॉडल 'हरियाला लोकसभा क्षेत्र' बनाने तथा आगामी पीढ़ी को स्वच्छ पर्यावरण देने के उम्दा उद्देश्य के साथ वर्ष 2026-27 के दौरान विशाल स्तर पर वृक्षारोपण महाअभियान का आयोजन किया गया है।

इस संदर्भ में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में शनिवार को अहमदाबाद में उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक आयोजित हुई। इस बैठक में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी तथा मुख्य सचिव श्री मनोज कुमार दास उपस्थित रहे।

इस महाअभियान अंतर्गत आगामी 12 जुलाई, 2026 को प्रशासन एवं जन भागीदारी के सहयोग से गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के कुल 308 निर्धारित स्थानों पर बड़े पैमाने पर विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

इसके अंतर्गत वन विभाग द्वारा 60 लाख से अधिक पेड़-पौधे लगाकर 82 वन कवच बनाने का सुदृढ़ आयोजन किया गया है। अहमदाबाद महानगर पालिका (एएमसी) द्वारा (गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र में) 31.43 लाख, अहमदाबाद जिले में 9 लाख, गांधीनगर महानगर पालिका (जीएमसी) द्वारा 6.27 लाख, गांधीनगर जिला प्रशासन द्वारा 12.50 लाख, अहमदाबाद नगरीय विकास प्राधिकरण (औडा) द्वारा 4 लाख, गांधीनगर नगरीय विकास प्राधिकरण (गुडा) द्वारा 1.67 लाख, गुजरात औद्योगिक विकास निगम (जीआईडीसी) द्वारा 1 लाख आदि मिलाकर कुल 1 करोड़ 26 लाख से अधिक पेड़-पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जो गत वर्ष की तुलना में दुगुना है।

इसके अंतर्गत लगभग 121 सामाजिक एवं स्वैच्छिक संस्थाओं, बैंकों तथा औद्योगिक संस्थाओं द्वारा 28.50 लाख पेड़-पौधे लगाने और उनके संरक्षण की जिम्मेदारी स्वीकार की गई है। इस महाअभियान में 2.33 लाख से अधिक स्वयंसेवक सहभागी होंगे।

बैठक में एक महत्वपूर्ण निर्णय के अंतर्गत अहमदाबाद मनपा द्वारा नगरजनों के लिए शीघ्र ही 101 ऑक्सीजन पार्क लोकार्पित किए जाएंगे। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने इन सभी ऑक्सीजन पार्कों का विवरण फोटो, वीडियो तथा जीपीएस लोकेशन के साथ वेबसाइट पर लिंक करने का सुझाव दिया है, जिससे नागरिकों को एक क्लिक पर ऑनलाइन इंडेक्स द्वारा सभी जानकारी मिल सके। इन ऑक्सीजन पार्कों में वॉकिंग ट्रैक, लाइट, साइनेजेस, पार्किंग तथा बच्चों के खेलने के क्षेत्र का आधुनिक आयोजन किया गया है, जिसे त्वरित लागू किया जाएगा।

अभियान को अधिक व्यापक बनाने के लिए प्रशासन द्वारा की गई माइक्रो-प्लानिंग के अनुसार 50 से अधिक पेड़-पौधे लगाए जा सकें; ऐसी आवासीय सोसाइटियों तथा सभी जीआईडीसी क्षेत्रों में प्रदूषणमुक्त वातावरण देने के लिए सघन वृक्षारोपण किया जाएगा। इसके अतिरिक्त; सड़कों के मीडियन, डम्प साइट्स, रिक्त सरकारी प्लॉट्स तथा रेलवे ट्रैक के आसपास की खुली भूमि पर बुवाई कर ग्रीन कवर बढ़ाया जाएगा। इस अभियान में मियावाकी पद्धति, डेंस प्लांटेशन जैसी आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों का उपयोग होगा और वन विभाग द्वारा 60 लाख पौधे लगाकर 83 'वन कवच' बनाए जाएंगे।

प्रधानमंत्री की प्रेरणा से प्रारंभ किए गए 'एक पेड़ माँ के नाम 2.0' अभियान अंतर्गत जन भागीदारी बढ़ाने के लिए टेनामेंट, रॉ-हाउस तथा बंगले वाले परिवारों को प्रति घर एक निःशुल्क पौधा दिया जाएगा और अग्रणी संस्थाओं द्वारा कॉर्पोरेट-सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (सीएसआर) अंतर्गत लाखों पेड़ों के संरक्षण एवं पालन-पोषण की जिम्मेदारी स्वीकार की गई है।

इस समीक्षा बैठक में विधायक तथा प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री जगदीश विश्वकर्मा, स्थानीय विधायक, शहरी विकास विभाग के सचिव श्री एम. थेन्नारसन, वन एवं पर्यावरण विभाग के प्रधान सचिव श्री विनोद राव, सड़क एवं भवन (आरएण्डबी) विभाग के सचिव श्री पी. आर. पटेलिया, हेड ऑफ द फॉरेस्ट फोर्स श्री जयपाल सिंह, मुख्यमंत्री के विशेष कार्याधिकारी (ओएसडी) श्री धीरज पारेख, अहमदाबाद मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणि, अहमदाबाद जिला कलेक्टर श्री भव्य वर्मा, गांधीनगर जिला कलेक्टर श्री रवींद्र खताले तथा औडा के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) श्री मीरांत परीख सहित वरिष्ठ अधिकारी और अहमदाबाद एवं गांधीनगर जिला भाजपा अध्यक्ष सहित पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने भावनगर परा में निर्माण एवं विकास कार्यों का किया गहन निरीक्षण

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने शनिवार, 27 जून, 2026 को भावनगर परा क्षेत्र में प्रगति पर चल रहे विभिन्न विकास एवं आधारभूत संरचना संबंधी कार्यों का गहन निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने एल.सी. नं. 218 पर निर्माणाधीन रोड अंडर ब्रिज (RUB), रेलवे कॉलोनी, रेलवे कर्मचारियों के बच्चों के लिए पुनर्जीवित किए जा रहे बाल रेल उद्यान, निर्माणाधीन टेनिस कोर्ट तथा अधिकारी विश्राम गृह में चल रहे मरम्मत एवं उन्नयन कार्यों का विस्तृत अवलोकन किया।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि मंडल रेल प्रबंधक ने निरीक्षण के दौरान सभी निर्माण कार्यों की प्रगति, गुणवत्ता तथा निर्धारित संरक्षा मानकों के अनुपालन की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी कार्य उच्च गुणवत्ता मानकों के अनुरूप निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण किए जाएं, ताकि कर्मचारियों एवं यात्रियों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकें।

श्री वर्मा ने रेलवे कॉलोनियों एवं अन्य परिसरों में स्वच्छ, सुरक्षित एवं हरित वातावरण विकसित करने पर विशेष बल देते हुए सड़क किनारे उपलब्ध रिक्त स्थानों तथा पुनर्जीवित किए जा रहे बाल रेल उद्यान के पैदल मार्गों के किनारे व्यापक वृक्षारोपण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि हरित वातावरण न केवल पर्यावरण संरक्षण में सहायक है, बल्कि कर्मचारियों एवं उनके परिवारों के लिए बेहतर जीवन-परिवेश भी सुनिश्चित करता है। निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक ने अधिकारियों को यात्रियों को सुरक्षित, सुगम एवं गुणवत्तापूर्ण रेल सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सभी विकास कार्यों में संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने तथा कार्यों की नियमित निगरानी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे आपसी समन्वय, टीम भावना एवं कार्यकुशलता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए भावनगर मंडल को उत्कृष्टता की नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में सक्रिय योगदान दें। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ऋत्विक शर्मा के साथ भावनगर मंडल के विभिन्न विभागों के शाखा अधिकारी एवं संबंधित कर्मचारी उपस्थित रहे।

गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र के लोकप्रिय सांसद एवं केन्द्रीय गृह तथा सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की उपस्थिति में जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक आयोजित हुई

▸▸ केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने किसानों को आर्थिक रूप से अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए प्रत्येक किसान को कम से कम दो पशुधन उपलब्ध कराने का सुझाव दिया

▸▸ श्री अमित शाह का बेटियों का ड्रॉपआउट रेशियो कम करने के लिए प्रति 3-4 गाँव एक क्लस्टर स्कूल बनाने तथा 70 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों को तत्काल पीएमजेएवाई कार्ड देने का आदेश

गांधीनगर : गांधीनगर लोकसभा क्षेत्र के सांसद तथा केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की प्रेरक उपस्थिति में शनिवार को गांधीनगर में जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित हुई। इस बैठक में केन्द्र सरकार प्रायोजित विभिन्न फ्लैगशिप योजनाओं की प्रगति तथा जिले के विकास कार्यों की सर्वग्राही समीक्षा की गई। बैठक में सांसद, जिले के विधायक, जिला कलेक्टर, जिला विकास अधिकारी, जिला, तहसील पंचायत और नगर पालिकाओं के अध्यक्ष तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि जिलों में केन्द्र सरकार की विभिन्न योजनाओं तथा कार्यक्रमों के क्रियान्वयन पर निगरानी के लिए केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा दिशा समितियों का गठन किया गया है। विकास कार्यक्रमों की प्रगति की मॉनिटरिंग, उनका कार्यक्षम एवं प्रभावी क्रियान्वयन हो; यह सुनिश्चित करने में दिशा समितियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

श्री अमित शाह ने सभी विभागों के कार्यों की सूक्ष्मतापूर्ण समीक्षा करते हुए कहा कि जिले के खातेदार किसानों को आर्थिक रूप से अधिक सुदृढ़ बनाने तथा एक भी किसान पशुधन के बिना न रहे; इसके लिए तत्काल सर्वेक्षण कर प्रत्येक किसान खातेदार को कम से कम दो पशुधन उपलब्ध कराने का सुझाव दिया।

श्री शाह ने वर्षा में विलंब के कारण उत्पन्न हुई स्थिति से निपटने के लिए तत्काल कंटीजेंसी प्लान तैयार करने तथा असिंचित क्षेत्रों का सर्वेक्षण शुरू कर उनका विवरण तैयार करने के भी निर्देश दिए।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने माध्यमिक शिक्षा विभाग में बेटियों का ड्रॉपआउट रेशियो घटाने के लिए तीन-चार गाँवों का एक क्लस्टर बनाकर नए विद्यालय का निर्माण करने के लिए सम्बद्ध अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने जिले में विद्यार्थियों में पठन-पाठन का प्रमाण बढ़ाने के लिए नवनिर्मित लाइब्रेरियों के बारे में जागरूकता लाने और इन नए पुस्तकालयों को जिला स्तर की मुख्य लाइब्रेरी से कनेक्ट को कहा।

इसके अतिरिक्त; उन्होंने गांधीनगर जिले में घरेलू गैस कनेक्शन, शौचालय, पेयजल एवं सिंचाई के पानी तथा बिजली जैसी सुविधाओं के अभाव वाले गाँवों का तत्काल सर्वेक्षण करवा कर रिपोर्ट तैयार करने को कहा। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना के संदर्भ में 'गाँव' शब्द की परिभाषा को अधिक स्पष्ट करने तथा कम से कम 35 से अधिक घर हों और विद्युत कनेक्शन से युक्त हों; ऐसे उपक्षेत्रों/क्षेत्रों को मानदंडों में निर्धारित करने को कहा।

श्री शाह ने जिले के 70 वर्ष से अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों को आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत कार्ड अविलंब तथा शीघ्र उपलब्ध कराने के लिए युद्ध स्तर पर कार्य करने के कड़े निर्देश दिए।

बैठक के प्रारंभ में जिला कलेक्टर श्री रवींद्र खताले ने स्वागत संबोधन कर केन्द्रीय गृह मंत्री तथा उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया। इस अवसर पर प्रशासन द्वारा गांधीनगर संसदीय क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए उठाए गए कदमों तथा भविष्य के आयोजन पर विस्तृत प्रेजेंटेशन भी दिया गया।

इस उच्च स्तरीय 'दिशा' बैठक में सांसद सदस्य श्री हसमुखभाई पटेल व श्री हरिभाई पटेल, विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल, श्री अल्पेशभाई ठाकोर, श्री बलराजसिंह चौहाण, श्री जयंतीभाई पटेल, गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री राजेशभाई पटेल, तहसील पंचायत एवं नगरपालिकाओं के अध्यक्ष, मनपा आयुक्त, जिला विकास अधिकारी श्री हसरत जैस्मीन सहित वरिष्ठ पदाधिकारी और उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल ने "नशा मुक्त भारत अभियान" के तहत चलाया व्यापक जन-जागरूकता अभियान,रेलवे कर्मचारियों एवं उनके परिवारों को स्वस्थ एवं नशामुक्त जीवनशैली अपनाने के लिए किया प्रेरित

अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्य दुरुपयोग एवं अवैध तस्करी विरोधी दिवस (26 जून) के उपलक्ष्य में पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल द्वारा 17 जून से 26 जून, 2026 तक "नशा मुक्त भारत अभियान" का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में आयोजित इस दस दिवसीय अभियान का उद्देश्य रेलवे कर्मचारियों, उनके परिवारजनों तथा स्थानीय समुदाय में नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा स्वस्थ एवं नशामुक्त जीवनशैली को प्रोत्साहित करना था। इस वर्ष अभियान की थीम "नशा मुक्त भारत अभियान – विकसित भारत की पहचान" रही।

अभियान के अंतर्गत मंडल रेलवे चिकित्सालय, भावनगर के साथ-साथ जेतलसर, वेरावल, धोला, जूनागढ़, पोरबंदर एवं बोटाद स्थित स्वास्थ्य इकाइयों तथा संबंधित रेलवे कॉलोनियों में विभिन्न जन-जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों के माध्यम से कर्मचारियों एवं उनके परिवारों को शराब, तंबाकू, गुटखा तथा अन्य मादक पदार्थों के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक दुष्प्रभावों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

रेलवे कॉलोनियों में स्वास्थ्य विभाग की टीमों द्वारा डोर-टू-डोर जनसंपर्क अभियान चलाकर लोगों को नशा छोड़ने, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा परिवार एवं समाज में सकारात्मक वातावरण बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया। इस दौरान नशा मुक्ति संबंधी पैम्फलेट एवं जागरूकता साहित्य का भी वितरण किया गया।

अभियान के दौरान मंडल के विभिन्न स्वास्थ्य केंद्रों पर चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य निरीक्षकों द्वारा स्वास्थ्य जागरूकता व्याख्यान (Health Talks) आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में प्रतिभागियों को नशे से होने वाले गंभीर दुष्परिणामों, बचाव के उपायों तथा नशामुक्त जीवन के लाभों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही उपस्थित कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों को नशे से दूर रहने एवं समाज को नशामुक्त बनाने की शपथ भी दिलाई गई।

जन-जागरूकता को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से मंडल रेलवे चिकित्सालय एवं सभी स्वास्थ्य इकाइयों में आकर्षक पोस्टर एवं बैनर प्रदर्शित किए गए। इसके अतिरिक्त, नशा छोड़ने के इच्छुक व्यक्तियों को उपलब्ध चिकित्सा उपचार, परामर्श सेवाओं तथा पुनर्वास संबंधी सहायता की जानकारी भी उपलब्ध कराई गई।

पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल का यह अभियान कर्मचारियों एवं उनके परिवारों में नशे के प्रति जागरूकता बढ़ाने, स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करने तथा समाज में नशामुक्त वातावरण के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावी पहल सिद्ध हुआ। मंडल प्रशासन ने सभी कर्मचारियों एवं नागरिकों से "नशा मुक्त भारत – विकसित भारत" के संकल्प को साकार करने हेतु सक्रिय सहभागिता निभाने का आह्वान किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रोत्साहक उपस्थिति में अहमदाबाद के शेला में 'श्री नित्य शांति भवन' का लोकार्पण सम्पन्न

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ प्रधानमंत्री ने 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र के साथ आधुनिकता और आध्यात्मिकता का समन्वय किया

▸▸ प्रधानमंत्री ने पाली एवं प्राकृत भाषाओं को 'क्लासिकल लैंग्वेज' का दर्जा देकर जैन साहित्य के अमूल्य ग्रंथों के संरक्षण का भगीरथ कार्य किया

▸▸ भौतिक सुख-सुविधाओं से ऊपर एक ऐसी सुख-शांति है, जो आध्यात्मिक मार्ग से ही प्राप्त होगी

▸▸ आध्यात्मिकता तथा आधुनिकता के समन्वय से ही लोककल्याण की नई राह उकेरी जा सकेगी : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ मुख्यमंत्री ने संतों तथा साधु-भगवंतों के आशीर्वाद से सभी से साथ मिलकर 'विकसित भारत@2047' के निर्माण के लिए कटिबद्ध होने का आह्वान

▸▸ राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरिश्वरजी महाराजा की निश्रा में महोत्सव आयोजित हुआ, शहरी विकास राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला की उपस्थिति

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल अहमदाबाद के शेला में नवनिर्मित 'श्री नित्य शांति भवन' के लोकार्पण महोत्सव में सहभागी हुए। मुख्यमंत्री ने इस नूतन भवन के जिन-चैत्य में विराजमान प्राचीन श्री मुनिसुव्रतस्वामी प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त कर राज्य की जनता की सुख-समृद्धि के लिए प्रार्थना की।

राष्ट्रसंत श्री पद्मसागरसूरिश्वरजी महाराजा की निश्रा में विधि-विधान के साथ आयोजित इस कार्यक्रम में शहरी विकास राज्य मंत्री श्रीमती दर्शनाबेन वाघेला भी उपस्थित रहीं।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने आधुनिकता तथा भौतिक समृद्धि के युग में आध्यात्मिकता को वास्तविक मानसिक शांति की कुंजी बताया। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता तथा आधुनिकता के समन्वय से ही लोककल्याण की नई राह उकेरी जा सकेगी।

मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरिश्वरजी महाराजा के मार्गदर्शन में निर्मित यह भवन आधुनिक सुविधाओं के साथ मानवता, शांति एवं जीवदया का नया चेतना केन्द्र बनेगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के सुशासन के 12 वर्ष का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि देश में 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र के साथ प्रगति हो रही है। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व से लेकर भारतीय संस्कृति के गौरव की विश्वभर में पुनर्स्थापित करने का ऐतिहासिक कार्य प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में साकार हुआ है।

जैन धर्म के सेवा एवं जीवदया के मूल्यों पर बल देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि जैन समाज में हजारों वर्षों से जनसेवा की अनूठी महिमा रही है। उन्होंने प्रधानमंत्री के करकमलों से गांधीनगर के कोबा में हाल ही में लोकार्पित संप्रति म्यूजियम का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने पाली एवं प्राकृत भाषाओं को 'क्लासिकल लैंग्वेज' का दर्जा देकर जैन साहित्य के अमूल्य ग्रंथों का संरक्षण करने का भगीरथ कार्य किया है।

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए पानी बचाने, स्वच्छता, 'वोकल फॉर लोकल' तथा प्राकृतिक खेती जैसे संकल्पों को जीवनशैली बनाने का आह्वान किया।

श्री पटेल ने संतों और साधु-भगवंतों के आशीर्वाद के साथ सभी से साथ मिलकर 'विकसित भारत@2047' के निर्माण के लिए कटिबद्ध होने का अनुरोध किया।

राष्ट्रसंत पूज्य पद्मसागरसूरिश्वरजी महाराजा ने अपने आशीर्वचन में ऐतिहासिक उदाहरणों तथा प्राचीन प्रसंगों द्वारा दान, परोपकार एवं जीव-दया का मर्म समझाया। उन्होंने सभी को कर्मबंधन से मुक्त होने के लिए त्याग, समर्पण तथा गरीब-जरूरतमंद लोगों की सेवा द्वारा संपत्ति के सदुपयोग का मार्ग अपनाने का बोध दिया

उल्लेखनीय है कि इस नवनिर्मित भवन में भव्य प्रभु चैत्य के अतिरिक्त साधु-साध्वीजियों के लिए उपाश्रय, व्याख्यान हॉल, आयंबिलशाला, बच्चों और युवाओं के लिए पाठशाला एवं ज्ञानशाला, यात्रियों के लिए धर्मशाला तथा सुकृतशाला सहित आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। इस अवसर पर आयोजक वोरा परिवार के सदस्य, राष्ट्रीय व्यापार कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष श्री सुनील सिंघी, विभिन्न जैन संघों के अग्रणी, श्रेष्ठीगण तथा बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।

वेस्टर्न रेलवे एडवेंचर एंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन ने उत्तराखंड हिमालय में पिंडारी ग्लेशियर ट्रेक सफलतापूर्वक पूरा किया

12 सदस्यीय अभियान दल द्वारा हाई-एल्टीट्यूड ट्रेक के दौरान साहस, धैर्य एवं टीम भावना का उत्कृष्ट प्रदर्शन

वेस्टर्न रेलवे एडवेंचर एंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन (WRASA), मुंबई सेंट्रल मंडल ने उत्तराखंड हिमालय के प्रसिद्ध पिंडारी ग्लेशियर ट्रेक को सफलतापूर्वक पूरा किया। यह अभियान पश्चिम रेलवे द्वारा अपने कर्मचारियों के बीच एडवेंचर स्पोर्ट्स, शारीरिक फिटनेस तथा टीम भावना को प्रोत्साहित करने की निरंतर प्रतिबद्धता का परिचायक है।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, मुंबई सेंट्रल मंडल के ट्रेन मैनेजर काउंसलर श्री सुरेन्द्र सोनी के नेतृत्व में 12 सदस्यीय दल ने लगभग 12,300 फीट की ऊँचाई पर स्थित पिंडारी ग्लेशियर तक का चुनौतीपूर्ण हाई-एल्टीट्यूड ट्रेक सफलतापूर्वक पूरा किया। घने जंगलों, अल्पाइन घास के मैदानों, बर्फीली धाराओं तथा हिमाच्छादित पगडंडियों से होकर गुजरते हुए दल ग्लेशियर के आधार तक पहुँचा, जहाँ से नंदा देवी एवं नंदा कोट पर्वत शिखरों के मनोहारी दृश्य दिखाई दिए। इस अभियान ने दल के सदस्यों के धैर्य, अनुशासन, दृढ़ संकल्प तथा आपसी सहयोग की भावना को उजागर किया।

अभियान दल में पश्चिम रेलवे के मुंबई सेंट्रल मंडल से श्री सुरेन्द्र सोनी, श्री श्रीजेश अची, श्री विनय पोरवाल, श्री अविनाश सालुंखे, श्री रामबचन सिंह, श्री दिनेश यादव, श्री अवनीश यादव, श्री रामावतार शर्मा, श्री प्रियेश सिंह एवं सुश्री प्राची सोनी शामिल थे। इनके अतिरिक्त पश्चिम मध्य रेलवे से श्री शैलेन्द्र उइके तथा श्री एस. पी. खरे भी अभियान दल का हिस्सा रहे।

अभियान की सफलता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री सुरेन्द्र सोनी ने कहा कि यह ट्रेक आत्म-खोज की एक प्रेरणादायक यात्रा रही, जिसने साहस, टीमवर्क एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता को और अधिक सुदृढ़ किया तथा हिमालय एवं प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान विकसित किया।

वेस्टर्न रेलवे एडवेंचर एंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन समय-समय पर रेल कर्मचारियों के लिए ट्रैकिंग, पर्वतारोहण तथा अन्य साहसिक खेलों का आयोजन करती रहती है, ताकि उनमें शारीरिक फिटनेस, आउटडोर कौशल एवं टीमवर्क की भावना को बढ़ावा मिले। आगामी सत्र में भी एसोसिएशन द्वारा ऐसे अनेक साहसिक अभियानों का आयोजन किया जाएगा।

'भारत टैक्सी' के माध्यम से गुजरात सहित देश के ट्रांसपोर्टेशन एवं मोबिलिटी क्षेत्र में ऐतिहासिक क्रांति की शुरुआत : केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह

- इस पहल से टैक्सी चालक अब ड्राइवर नहीं, बल्कि 'सारथी' और 'मालिक' बने
- ग्राहकों को वाजिब किराए पर सुरक्षित सवारी के साथ सारथियों के लिए सम्मान, सुरक्षा और समृद्धि की गारंटी यानी 'भारत टैक्सी'
- अमूल और इफको ने जिस प्रकार निजी कंपनियों के सामने सफलता प्राप्त की है, उसी प्रकार 'भारत टैक्सी' भी ग्राहकों तथा सारथियों के हित में विजयी होगी

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- 'भारत टैक्सी' नई सेवा की गुजरात में लॉन्चिंग प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के सपने को अधिक मजबूत करने का संकल्प
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिया गया 'श्रम एव जयते' का मंत्र सारथियों के सम्मान से साकार होगा
- इस पहल से ड्राइवर अब 'सारथी' कहलाएगा; जो आत्मनिर्भरता, आदर और आत्मसम्मान का प्रतीक बनेगा

▶▶ केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के करकमलों द्वारा गांधीनगर से गुजरात में 'भारत टैक्सी' का शुभारंभ

▶▶ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की प्रेरणादायी उपस्थिति

▶▶ अहमदाबाद, वडोदरा, सूरत, राजकोट सहित गुजरात के 14 प्रमुख शहरों में 'भारत टैक्सी' का शुभारंभ

गांधीनगर, 27 जून : केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि 'भारत टैक्सी' के माध्यम से गुजरात सहित देश के ट्रांसपोर्टेशन एवं मोबिलिटी क्षेत्र में ऐतिहासिक क्रांति का शुभारंभ हुआ है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'सहकार से समृद्धि' के मंत्र को साकार करते हुए सहकारिता मानदंड पर देश की सर्वप्रथम टैक्सी सेवा 'भारत टैक्सी' का शनिवार को गांधीनगर से गुजरात के सभी प्रमुख शहरों में आधिकारिक शुभारंभ किया गया है। अमूल तथा इफको के सफल सहकारिता मॉडल पर आधारित इस नूतन पहल से टू-व्हीलर, ऑटो रिक्शा तथा फोर-व्हीलर चलाने वाले देश के लाखों वाहन चालकों को निजी ऐप आधारित कंपनियों के शोषण से मुक्ति मिलेगी। इस पहल से टैक्सी चालक ड्राइवर नहीं, बल्कि 'सारथी' और 'मालिक' हैं।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के करकमलों द्वारा शनिवार को महात्मा मंदिर, गांधीनगर से विश्व की सबसे बड़ी तथा चालकों के स्वामित्व वाली सहकारी मोबिलिटी संस्था 'भारत टैक्सी' का गुजरात में भव्य शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, कृषि एवं सहकारिता मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी तथा राज्य मंत्री श्री रमेशभाई कटारा विशेष रूप से उपस्थित रहे।

इस अवसर पर गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री शाह ने कहा कि निजी कंपनियाँ वाहन चालकों को केवल ड्राइवर मानकर उनका शोषण करती थीं, कमीशन के नाम पर उनकी कमाई ले लेती थीं तथा बिना किसी सुनवाई के उनका रजिस्ट्रेशन भी ब्लॉक कर देती थीं, परंतु 'भारत टैक्सी' में ये वाहन चालक केवल ड्राइवर नहीं, बल्कि 'सारथी' के रूप में पहचाने जाते हैं। आज देशभर के 7 लाख से अधिक सारथी 100 रुपए के शेयर के साथ 'भारत टैक्सी' के सह-मालिक एवं शेयरधारक बने हैं। यह मॉडल केवल ग्राहकों को वाजिब दाम पर सुरक्षित सवारी ही उपलब्ध नहीं देता, बल्कि सारथियों को सम्मान, सुरक्षा और समृद्धि की भी गारंटी देता है। केन्द्रीय मंत्री श्री शाह ने बलपूर्वक कहा कि आज एक महिला पशुपालक, जिसने केवल 100 रुपए के शेयर से शुरुआत की थी, आज एक ऐसे सिस्टम अर्थात अमूल का हिस्सा है, जिसका वार्षिक टर्नओवर 1.25 लाख करोड़ रुपए है, जिसके परिणामस्वरूप अमूल विश्व का सबसे विश्वसनीय फूड ब्रांड बनकर उभर आया है।

बाजार में चल रही प्रतिस्पर्धा के विषय में स्पष्टता करते हुए उन्होंने कहा कि 'भारत टैक्सी' की एंट्री रोकने के लिए बाजार की अन्य बड़ी कंपनियाँ इस समय जान-बूझकर नुकसान उठाकर भी किराए कम कर रही हैं। यह केवल लोगों को गुमराह करने की युक्ति है, भारत टैक्सी न तो थकेगी और न ही मैदान छोड़कर भागेगी। सहकारिता की भावना तथा सेवा के संकल्प के साथ यह संस्था अडिग खड़ी रहेगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि जिस प्रकार अमूल और इफको ने निजी कंपनियों के सामने सफलता प्राप्त की है, उसी प्रकार भारत टैक्सी भी ग्राहकों और सारथियों के हित में विजयी होगी।

इस सेवा को सुदृढ़ बनाने के लिए देश की शीर्ष सहकारी संस्थाओं जैसे एनसीडीसी, इफको, कृभको, एनडीडीबी, नाबार्ड तथा अमूल जैसी संस्थाओं ने आर्थिक एवं संगठनात्मक सहयोग प्रदान किया है। इसके अतिरिक्त; गुजरात मेट्रो रेल कॉरपोरेशन, एएमसी, गुजरात स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक, ट्रैफिक पुलिस तथा पश्चिम रेलवे के साथ समन्वय कर इस सेवा का विस्तार किया गया है। केन्द्रीय सहकारिता मंत्री ने जोड़ा कि आगामी दो वर्षों में भारत टैक्सी नागपुर, पुणे, मुंबई, लखनऊ, चंडीगढ़, जयपुर तथा कोलकाता सहित देश के 500 से अधिक छोटे-बड़े शहरों में अपनी सेवाओं का विस्तार करेगी।

केन्द्रीय मंत्री श्री अमित शाह ने आगे कहा कि भारत टैक्सी केवल टैक्सी सेवा तक सीमित नहीं है। आने वाले दिनों में यह सहकारी संस्था अपने सदस्य-सारथियों को सस्ती दर पर लोन दिलाने में सहायता करेगी, उनके परिवारों के लिए बीमा की चिंता करेगी तथा उनके बिजनेस विस्तार के मॉडल को भी आर्थिक समर्थन प्रदान करेगी। केन्द्रीय मंत्री श्री अमित शाह ने गुजरात के सभी सारथी भाई-बहनों को उज्ज्वल भविष्य एवं समृद्धि के लिए अनंत शुभकामनाएँ दीं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि श्री अमितभाई शाह ने देश के प्रथम सहकारिता मंत्री के रूप में सहकारिता क्षेत्र को अमुक सेक्टर तक सीमित नहीं रखकर सहकारी मंडलियों को भी एक छोटी कॉर्पोरेट कंपनी में बदलने के सफल प्रयास शुरू किए हैं।

इसी प्रकार की एक अभिनव पहल 'भारत टैक्सी' सेवा का आज गुजरात में गांधीनगर से श्री अमितभाई शाह ने शुभारंभ कराया है।

उन्होंने कहा कि यह शुरुआत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के स्वप्न को अधिक सशक्त बनाएगी। जो सहकारिता क्षेत्र केवल कृषि, पशुपालन, डेयरी तथा बैंकिंग तक सीमित था, वह अब श्रम के सम्मान के साथ सारथियों की भागीदारी का एक नया मॉडल बनने वाला है।

मुख्यमंत्री ने विशेष रूप से उल्लेख किया कि जब दिल्ली में श्री अमित शाह ने भारत टैक्सी की शुरुआत कराई थी, तब उन्होंने कहा था कि श्रम करने वाले लोगों की लाभ में भी भागीदारी का नाम ही सहकारिता है। इस विचारधारा का लाभ गुजरात के अनेक टैक्सी चालकों को भी मिलेगा। प्रधानमंत्री ने भारत में श्रम के सम्मान का दृष्टिकोण 'श्रम एव जयते' के मंत्र से अपनाया है और श्री अमितभाई शाह के नेतृत्व में यह विचार ही भारत टैक्सी के मूल में रहा हुआ है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्षों तक टैक्सी चालक केवल सेवा देते रहे, लेकिन कंपनियों के लाभ में उनका कोई हिस्सा नहीं था तथा उन्हें निर्धारित वेतन की फिक्स आय में ही अपना जीवन-यापन करना पड़ता था। इस व्यथा को व्यवस्था में परिवर्तित करने के विचार के साथ भारत टैक्सी की शुरुआत हुई है। अब ड्राइवर 'सारथी' कहलाएगा। 'सारथी' शब्द अब आत्मनिर्भरता, आदर और आत्मसम्मान का प्रतीक बनेगा।

भारत की 8 बड़ी सहकारी संस्थाओं के माध्यम से शुरू हुई भारत टैक्सी सारथियों के स्वामित्व वाला विश्व का सबसे बड़ा सहकारी ढाँचा बना है। श्री अमितभाई शाह ने फरवरी 2026 में इस मॉडल की शुरुआत कराई थी। तब से लेकर आज तक भारत टैक्सी के 7 लाख सदस्य हुए हैं तथा 37 लाख ग्राहकों ने इस टैक्सी सेवा का लाभ लिया है। उन्होंने कहा कि सहकारिता का यह एक ऐसा मॉडल है, जिसमें विकास का केन्द्र केवल पूंजी नहीं, बल्कि मानव है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस नई पारदर्शी पहल के परिणामस्वरूप यात्रियों को सभी जानकारियाँ स्पष्ट रूप से उपलब्ध होंगी तथा किराए के मानदंड पारदर्शी रहेंगे। इससे ग्राहकों एवं सारथियों; दोनों के हितों की रक्षा होगी। जिन महिलाओं को वाहन चलाना आता होगा, उनके लिए भी 'सारथी दीदी' द्वारा रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होने वाले हैं तथा माताओं-बहनों की सुरक्षा भी बढ़ने वाली है। सहकारिता क्षेत्र में अनेक नई पहलों द्वारा गुजरात ने सदैव देश को नई दिशा दी है। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र से सहकार से समृद्धि की दिशा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं श्री अमितभाई शाह ने दी है।

मुख्यमंत्री ने सभी का आह्वान किया कि वे साथ मिलकर भारत टैक्सी को केवल एक सेवा के रूप में नहीं, बल्कि एक जन आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाएँ।

भारत टैक्सी के गुजरात लॉन्चिंग समारोह में सहकार टैक्सी को-ऑपरेटिव लिमिटेड के अध्यक्ष डॉ. जयेन मेहता ने स्वागत संबोधन में कहा कि भारत के सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के विजन से प्रारंभ हुई भारत टैक्सी के साथ केवल पाँच महीनों में ही 7 लाख सारथी और 40 लाख ग्राहक जुड़ चुके हैं। इनमें गुजरात के 1.50 लाख से अधिक सारथी तथा 6 लाख ग्राहक शामिल हैं।

कार्यक्रम के अंत में सहकार टैक्सी को-ऑपरेटिव लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) कर्नल हिमांशु ने आभार व्यक्त किया।

केन्द्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल सहित महानुभावों के करकमलों द्वारा गुजरात में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले भारत टैक्सी के विभिन्न 06 सारथी भाई-बहनों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम में केन्द्रीय सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की उपस्थिति में गुजरात मेट्रो रेल कॉरपोरेशन, गुजरात राज्य सहकारी बैंक, अदाणी एयरपोर्ट, अहमदाबाद पश्चिम रेलवे, एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया-सूरत, राजकोट एवं वडोदरा, अहमदाबाद मनपा आयुक्त, बीआरटीएस तथा गुजरात ट्रैफिक पुलिस के साथ विभिन्न समझौता ज्ञापनों-एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए।

उल्लेखनीय है कि आज से गुजरात के 14 प्रमुख शहरों अहमदाबाद, वडोदरा, सूरत, राजकोट, द्वारका, सोमनाथ, मेहसाणा, आणंद, नडियाद, वलसाड, अमरेली, जूनागढ, जामनगर तथा भावनगर में भारत टैक्सी की सेवाओं का शुभारंभ कर दिया गया है, जबकि आगामी लगभग एक माह के भीतर समग्र गुजरात में यह सेवा शुरू की जाएगी।

इस अवसर पर अमूल फेडरेशन के अध्यक्ष श्री अशोकभाई चौधरी, भारत सरकार के सहकारिता सचिव डॉ. आशीष कुमार भूटानी, गुजरात के मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, सहकारिता विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री अरुणकुमार सोलंकी, भारत टैक्सी के सारथी प्रतिनिधि श्री किशनभाई पटणी एवं श्री धारा वल्लभ, सहकारिता विभाग के अग्रणी सहित चार हजार से अधिक सारथी मित्र उपस्थित रहे।

आजादी के 75 साल बाद भी न्याय व्यवस्था में आवश्यक सुधारों की आवश्यकता पर चिंतन

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। ब्रिटिश शासनकाल के दौरान, भारत भर में एकसमान न्यायिक प्रणाली और व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से न्यायिक प्रणाली और कानून तैयार किए गए थे। यह व्यवस्था समय के अनुरूप भी होनी चाहिए थी। लेकिन स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद भी, देश की वर्तमान स्थिति के अनुरूप 150-200 वर्ष पुराने कानूनों, न्यायिक प्रणाली और व्यवस्था में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

समाचारों के अनुसार, अक्सर ये आरोप लगते हैं कि सत्ताधारी सत्ता हासिल करने और उसे बनाए रखने के लिए कानूनों और न्याय प्रणाली का दुरुपयोग करते हैं। हमारी न्यायपालिका इसकी शिकार है। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा मनोनीत वकील संसद में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन होते हैं और देश के हित में तथा अपराध रोकने के लिए कानून बनाते हैं। न्यायाधीशों की नियुक्ति से लेकर सरकारी वकीलों के चयन और मध्यस्थों के चयन तक, वे हर प्रक्रिया में हस्तक्षेप करते हैं। जब वे और उनके परिवार के सदस्य अपराधियों, भगोड़ों, बलात्कारियों, घोटालेबाजों और देशद्रोहियों को बचाने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में मुकदमे लड़ते हैं और यहां तक कि जमानत के लिए भी जी-तोड़ प्रयास करते हैं, तो स्वाभाविक है कि सत्ताधारी दल की स्थिति इन मामलों के फैसलों को प्रभावित करती है।

समाचार मीडिया का मानना है कि मुकदमों के वर्षों तक खिंचने के कारण सबूत गुम हो जाते हैं। गवाह बदल जाते हैं, दस्तावेज़ गुम हो जाते हैं (हाल ही में एसएमसी में फाइलों के गुम होने का मामला इसका ताजा उदाहरण है), जमानत मिनटों में दे दी जाती है या फैसले बदल दिए जाते हैं, जिससे न्याय व्यवस्था की गरिमा को ठेस पहुंचती है। इसके अलावा, अदालती कार्यवाही में अत्यधिक देरी से न्याय प्रक्रिया पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। गवाह और सबूत कमजोर हो जाते हैं। न्यायाधीशों के बार-बार बदलने से मुकदमों में निरंतरता भी नहीं बनी रहती। साथ ही,

नए न्यायाधीश को मामले को समझने में समय बर्बाद करना पड़ता है।

अतः, यह लेख केवल न्याय व्यवस्था में सुधार लाने और उसे अधिक गरिमामय बनाने के उद्देश्य से लिखा गया है। इसका न्यायालय की कार्यवाही या किसी निर्णय से कोई संबंध नहीं है, न ही यह कोई आलोचना है। यह जनहित में है, जिसका क्रियान्वयन शासकों की इच्छाशक्ति, दूरदर्शिता और नैतिक बल पर निर्भर करता है।

ज़ेरॉक्स कॉपी के आधार पर स्टाम्प ड्यूटी वसूलना अवैध है: गुजरात उच्च न्यायालय का ऐतिहासिक फैसला

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा)

गुजरात उच्च न्यायालय ने स्टांप शुल्क विवाद पर एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया है। इसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि मूल दस्तावेज को जब्त किए बिना केवल फोटोकॉपी के आधार पर बकाया स्टांप शुल्क की वसूली की कोई भी कार्रवाई पूरी तरह से अवैध और अधिकार क्षेत्र से बाहर है। न्यायमूर्ति निर्जल एस देसाई की एकल पीठ ने याचिका संख्या 4257/2022 में नारनभाई सामंतभाई भरवाड़ (मृतक) के कानूनी वारिसों की ओर से पेश हुए अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने के बाद यह फैसला सुनाया। लेकिन इस मामले में, छह साल बाद यानी अप्रैल 2020 में बकाया स्टांप शुल्क के भुगतान के लिए नोटिस जारी किया गया और अक्टूबर 2020 में, 57,99,800 रुपये की कम स्टांप शुल्क और 4,50,000 रुपये का जुर्माना, कुल मिलाकर 62,49,800 रुपये का भुगतान करने का आदेश दिया गया।

यह आदेश स्टाम्प ड्यूटी के सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी किया गया था। इस आदेश को गुजरात उच्च न्यायालय में चुनौती दी गई थी। माननीय उच्च न्यायालय ने गुजरात स्टाम्प अधिनियम, 1958 की धारा 33, 37 और 39 की विस्तृत समीक्षा के बाद यह निर्णय दिया कि धारा 3782 के तहत मूल दस्तावेज को कलेक्टर को भेजना अनिवार्य है और फोटोकॉपी की जब्ती को जब्ती नहीं माना जा सकता।

इस संबंध में, माननीय न्यायालय ने कई निर्णयों का हवाला देते हुए स्पष्ट रूप से कहा कि जब तक दस्तावेज़ को कानूनी रूप से जब्त नहीं किया जाता, तब तक स्टाम्प 2700 के तहत कोई कार्रवाई करने का अधिकार नहीं है। चूंकि राज्य सरकार इस तथ्य का खंडन नहीं कर सकी, इसलिए पारित आदेशों को रद्द कर दिया गया। हालांकि, न्यायालय ने राज्य सरकार को कानून के अनुसार नई कार्रवाई करने की अनुमति दी है। न्यायालय ने यह भी स्पष्ट किया है कि भविष्य में किसी भी कार्रवाई में दोनों पक्षों के सभी अधिकार और तर्क खुले रहेंगे।

सोना-चांदी में बड़ी टूट: 26 दिनों में 13 हजार रुपये टूटा सोना, चांदी 39 हजार रुपये लुढ़की, निवेशकों की बढ़ी चिंता

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में बदलते आर्थिक संकेतों, डॉलर की लगातार मजबूती और वैश्विक निवेशकों की मुनाफावसूली का असर अब भारतीय सर्राफा बाजार पर भी साफ दिखाई देने लगा है। पिछले 26 दिनों के भीतर सोना और चांदी की कीमतों में आई तेज गिरावट ने बाजार की दिशा ही बदल दी है। जून की शुरुआत तक लगातार नई ऊंचाइयों को छूने वाला सोना अब करीब 13 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हो चुका है, जबकि चांदी की कीमत में लगभग 39 हजार रुपये प्रति किलोग्राम की गिरावट दर्ज की गई है। इस तेज गिरावट ने निवेशकों, ज्वेलरी कारोबारियों और आम ग्राहकों के बीच नई चर्चाओं को जन्म दे दिया है।

बाजार के ताजा आंकड़ों के अनुसार जून के शुरुआती दिनों में 24 कैरेट सोने की कीमत करीब 1.55 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई थी। उस समय लगातार बढ़ती वैश्विक अनिश्चितताओं, सुरक्षित निवेश की मांग और अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेजी के कारण सोने में जबरदस्त खरीदारी देखने को मिली थी। लेकिन इसके बाद हालात तेजी से बदले और अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने पर दबाव बढ़ने लगा। इसका सीधा असर घरेलू बाजार पर पड़ा और अब 24 कैरेट सोने का भाव घटकर लगभग 1.42 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम के आसपास पहुंच गया है। यानी महज 26 दिनों के भीतर सोना करीब 13 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम तक टूट गया। सोने के साथ-साथ चांदी की कीमतों में भी बड़ी गिरावट दर्ज की गई है। जून की शुरुआत में चांदी जहां ऊंचे स्तर पर कारोबार कर रही थी, वहीं अब इसका भाव करीब 2.40 लाख रुपये प्रति किलोग्राम के आसपास पहुंच गया है। इस अवधि में चांदी लगभग 39 हजार रुपये प्रति किलोग्राम तक सस्ती हो चुकी है। चांदी में आई यह गिरावट पिछले कई महीनों की सबसे बड़ी गिरावटों में से एक मानी जा रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस गिरावट के पीछे कई वैश्विक कारण एक साथ काम कर रहे हैं। सबसे बड़ा कारण अमेरिकी डॉलर का मजबूत होना माना जा रहा है। जब डॉलर मजबूत होता है तो अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने की मांग कमजोर पड़ जाती है, क्योंकि सोने की खरीद अन्य मुद्राओं में महंगी हो जाती है। इसके अलावा वैश्विक निवेशकों द्वारा रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंचने के बाद मुनाफावसूली किए जाने से भी सोने और चांदी पर दबाव बढ़ा है। कई बड़े निवेशकों ने ऊंचे दाम पर खरीदे गए सोने और चांदी में लाभ बुक किया, जिससे अंतरराष्ट्रीय कीमतों में लगातार नरमी देखने को मिली।

बाजार विश्लेषकों का मानना है कि वर्ष की शुरुआत में सोने और चांदी ने जिस तेजी से रिकॉर्ड स्तर बनाए थे, उसके बाद कुछ हद तक कीमतों में सुधार की संभावना पहले से जताई जा रही थी। हालांकि गिरावट की रफ्तार अपेक्षा से अधिक तेज रही है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ब्याज दरों को लेकर बने माहौल, वैश्विक आर्थिक आंकड़ों और निवेशकों की रणनीति में बदलाव ने कीमती धातुओं पर दबाव बढ़ाया है।

किसान नेता इसुदान गढ़वी, विधायक गोपाल इटालिया, मनोज सोरठिया, प्रवीण राम ने किसानों के मुआवजे और न्याय के लिए आवाज उठाई

- **सुरेंद्रनगर के वढवाण तालुका में AAP की किसान महापंचायत आयोजित हुई**
- **इसुदान गढ़वी का बड़ा ऐलान - किसानों के मुद्दों को लेकर 5 जुलाई को गांधीनगर में सामूहिक उपवास करेंगे**
- **भाजपा के नेताओं और कंपनियों की बैठक हो चुकी है, 100 हाईटेंशन लाइनें बिछाई जाएंगी: इसुदान गढ़वी**
- **स्टेट लेवल की मुआवजा समिति बनाओ, किसान को मुनाफे में हिस्सा दो: इसुदान गढ़वी**
- **किसानों की स्थायी समस्याओं के समाधान के लिए AAP को 150 सीटें जिताओ: इसुदान गढ़वी**
- **कृषि मंत्री विधानसभा में किसानों का मजाक उड़ाते हैं कि इतनी समस्याओं के बावजूद वोट तो भाजपा को ही मिलते हैं: गोपाल इटालिया**
- **उद्योगपतियों और गुंडों के प्रतिनिधि सरकार में बैठे हैं, आम जनता की आवाज कहां है? : गोपाल इटालिया**
- **बड़ी कंपनियों को बिना आंदोलन के आसानी से पानी मिल जाता है, जबकि आम आदमी को भटकना पड़ता है: गोपाल इटालिया**
- **खेती बर्बाद हो और किसान शहरों में मजदूरी करने को मजबूर हो जाए, यही सरकार की असली नीति है: मनोज सोरठिया**
- **सत्ता के अहंकार में अंधी भाजपा को जगत के तात के आंसू और सोशल मीडिया पर हो रहे अत्याचार दिखाई नहीं देते: मनोज सोरठिया**
- **किसान एकजुट होकर लड़ेंगे और भाजपा में हार का डर पैदा होगा, तभी सरकार को झुकना पड़ेगा: मनोज सोरठिया**
- **अगर गुजरात को भाजपा की गुलामी और तानाशाही से मुक्त कराना है तो गुजरात की गली-गली में चैतरभाई वसावा जैसे नेता पैदा करने होंगे: मनोज सोरठिया**
- **सुरेंद्रनगर से किसान महापंचायत पार्ट-2 का रणशंख फूंका जा रहा है: प्रवीण राम**
- **किसान नेता प्रवीण राम की किसानों से अपील - आइए, हम सब मिलकर भाजपा सरकार के साथ-साथ इन बिजली के खंभों को भी उखाड़ फेंकें**

अहमदाबाद/सुरेंद्रनगर/सूरत/अमरेली/राजकोट/भावनगर/जामनगर/गिर सोमनाथ/देवभूमि द्वारका/गुजरातः राज्य में किसानों की जमीन पर हो रहे तानाशाहीपूर्ण और गैरकानूनी तरीके से बिजली के खंभे लगाने के कार्य के विरोध में तथा किसानों के विभिन्न मुद्दों को लेकर आम आदमी पार्टी द्वारा "किसान महापंचायत" का आयोजन किया गया। यह महापंचायत सुरेंद्रनगर के वढवाण तालुका के नगरा गांव में आयोजित की गई, जिसमें आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष इसुदान गढ़वी, विधायक गोपाल इटालिया, प्रदेश संगठन महामंत्री मनोज सोरठिया, फ्रंटल संगठन प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण राम, युवा मोर्चा अध्यक्ष ब्रिजराज सोलंकी, महिला अध्यक्ष पायल साकरिया, प्रदेश मंत्री अनुप शर्मा, प्रदेश संगठन मंत्री विक्रम दवे, प्रदेश उपाध्यक्ष मयूर साकरिया, प्रदेश महिला उपाध्यक्ष माधवीबेन राजपूत तथा संगठन मंत्री डॉ. राणाजी सहित जोन स्तर के बड़ी संख्या में पदाधिकारी उपस्थित रहे और उन्होंने किसानों के अधिकारों, उचित मुआवजे और न्याय की मांग को मजबूती से उठाया। इस कार्यक्रम में आम आदमी पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ-साथ बड़ी संख्या में किसान भी उपस्थित रहे।

इस किसान महापंचायत में आम आदमी पार्टी के गुजरात प्रदेश अध्यक्ष और किसान पुत्र इसुदान गढ़वी ने अपनी बात रखते हुए कहा कि मैंने तालुका पंचायत और जिला पंचायत चुनाव से पहले ही कहा था कि "चुनाव के बाद ये लोग खेतों में खंभे लगाना शुरू करेंगे" और अब वही हो रहा है। भाजपा के लोग हर पांच साल में हमें धोखा देने आते हैं, इसलिए अब इन्हें पहचानने की जरूरत है। मैंने भाजपा के लोगों से पूछा कि "किसानों पर इतना अत्याचार क्यों कर रहे हो?" तो भाजपा के एक नेता ने कहा कि "खंभे लगाने की समस्या 15 दिनों में सुलझ जाएगी, उसके बाद गुजरात के किसान नरेंद्रभाई मोदी के विकास के नाम पर फिर भाजपा को वोट दे देंगे।" मेरी भाजपा के लोगों को चुनौती है कि अगर तुममें ताकत है तो अक्टूबर 2027 में इन खंभों का काम शुरू करके दिखाओ। आम आदमी पार्टी के केवल एक-दो जिला पंचायत या तालुका पंचायत सदस्य जीताकर या पांच विधायक जीताकर काम नहीं चलेगा, अगर किसानों को अपनी स्थायी समस्याओं का समाधान चाहिए तो आम आदमी पार्टी को 150 सीटें जितानी होंगी। अब गुजरात के किसानों की मां समान जमीन पर खंभे लगाने का काम शुरू हो गया है, इसलिए किसान जाग गए हैं। मुझे जानकारी मिली है कि 100 हाईटेंशन लाइनें बिछाई जाएंगी और इसके लिए भाजपा नेताओं और कंपनियों की बैठक हो चुकी है। लगभग डेढ़ लाख खंभे लगाए जाएंगे। इसलिए ये लोग अत्याचार कर रहे हैं। इस खंभा मुद्दे पर हमने मुख्यमंत्री से मांग की है कि स्टेट लेवल की मुआवजा समिति बनाई जाए और किसानों को ऐसा मुआवजा दिया जाए कि उन्हें मुनाफे में भी हिस्सेदारी मिले। आगामी 5 जुलाई को हम गांधीनगर में सामूहिक उपवास करेंगे। जब तक इस शरीर में प्राण हैं, तब तक किसानों, भाग्याओं और खेत मजदूरों के लिए लड़ते रहेंगे। किसानों को संबोधित करते हुए आम आदमी पार्टी के विसावदर विधायक गोपाल इटालिया ने कहा कि एक तरफ कीचड़ से भरा कमल है और दूसरी तरफ सफाई करने वाली झाड़ू है। वर्षों से गंदगी फैलाने वाले कमल का बटन दबाते आए हो, तो गंदगी ही बढ़ेगी। अगर बटन ही कीचड़ का दबाओगे तो व्यवस्था साफ कैसे होगी? एक बार झाड़ू का बटन दबाकर देखो कि क्या होता है! यहां चारों तरफ समस्याओं का अंबार है, तो आदमी क्या करे? हम तो अभी राजनीति में नए-नए आए हैं और पहली बार विधायक बने हैं। इससे पहले हमने कभी इतने करीब से नहीं देखा था कि असली राजनीति कैसी होती है, नेता-अधिकारी कैसे होते हैं और सरकारें जनता के बारे में क्या सोचती हैं। हमें आम लोगों को पानी के लिए सड़क पर उतरकर आंदोलन करना पड़ता है, जबकि बड़ी-बड़ी कंपनियों को बिना किसी आंदोलन के आसानी से पानी मिल जाता है, क्योंकि उन कंपनियों के लोग, गुंडे, उद्योगपति और बड़े-बड़े प्रभावशाली लोगों के प्रतिनिधि सरकार में बैठे हैं। आज आप खुद से सवाल पूछिए कि आपकी आवाज उठाने वाला कौन सरकार में बैठा है? अगर सत्ता में बैठे लोग आपकी नहीं सुनते, तो पूरी आम आदमी पार्टी, जिसमें मैं स्वयं, इसुदान गढ़वी, चैतर वसावा, प्रवीण राम और ब्रिजराजसिंह सोलंकी शामिल हैं, आपके बेटे बनकर आए हैं। हमें थोड़ा आशीर्वाद दीजिए ताकि हम आपकी आवाज विधानसभा तक पहुंचा सकें। लेकिन सच कहूं तो अब केवल आवाज पहुंचाने की नहीं, बल्कि लड़कर हक लेने की बात है! रोज इतने आंदोलन और किसानों का भारी आक्रोश होने के बावजूद सरकार को हमारी पीड़ा दिखाई नहीं देती। अभी विधानसभा सत्र में स्वयं कृषि मंत्री ने मुझसे कहा कि, "गोपालभाई, आप किसानों की समस्याओं की बहुत बातें करते हैं, लेकिन अगर इतनी समस्याएं हैं तो चुनाव में वोट तो भाजपा को ही मिलते हैं ना!" सोचिए, वे सरकार में बैठकर हमारा मजाक उड़ाते हैं। इन नेताओं को बड़ी-बड़ी लालबत्ती वाली गाड़ियों में घूमना है और पदों का आनंद लेना है, लेकिन जनता का काम नहीं करना। आखिर सरकार किसके लिए है, कंपनियों के लिए या देश की जनता के लिए?

आम आदमी पार्टी के प्रदेश संगठन महामंत्री मनोज सोरठिया ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि मुझे लगता है कि अब सरकार हमारे धैर्य की परीक्षा ले रही है। किसान अपनी लंबित मांगों को लेकर गांधीनगर के दरवाजे तक पहुंच गए, फिर भी सरकार में बैठे एक भी व्यक्ति या भाजपा का दुपट्टा पहनकर घूमने वाले नेताओं को किसानों पर जरा भी दया नहीं आती। उन्हें इस बात की कोई चिंता नहीं कि गुजरात का किसान बार-बार आक्रोशित होकर आंदोलन करने के लिए क्यों मजबूर हो रहा है। आज सोशल मीडिया पर लगातार किसानों पर हो रहे अत्याचार के वीडियो ही दिखाई दे रहे हैं। हम चाहे जितनी लड़ाई लड़ लें, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उन्हें यह भ्रम है कि उनकी सत्ता हमेशा रहने वाली है और कभी जाने वाली नहीं है। इसलिए गांव और किसान उनकी प्राथमिकता में नहीं हैं। खेती बर्बाद हो जाए, गांव उजड़ जाएं और किसान मजबूर होकर शहरों की फैक्ट्रियों में उद्योगपतियों के यहां कड़ी मजदूरी करने जाएं, तंग गलियों में गंदगी और नालियों के बीच रहने को मजबूर हों, यही इस सरकार की असली नीति है। पिछले पच्चीस वर्षों में गुजरात में खेती के क्षेत्र में जितना विकास होना चाहिए था, उतना नहीं हुआ और किसानों की आर्थिक स्थिति खराब हुई है। जीडीपी (GDP) में खेती की हिस्सेदारी केवल 23 प्रतिशत के आसपास ही रह गई है, क्योंकि सरकार केवल उद्योगों को संरक्षण देती है। आज प्रधानमंत्री देशवासियों से सोना खरीदना और विदेश यात्रा बंद करने को कहते हैं, लेकिन सरकार ने खेती की जो हालत कर दी है, उसे देखते हुए भविष्य में वे देशवासियों से सप्ताह में दो दिन उपवास करने के लिए भी कह सकते हैं, क्योंकि किसान अनाज उगाना ही बंद कर देंगे! खेती और उद्योग दोनों का समान विकास ही देश की सच्ची प्राथमिकता होनी चाहिए। हम यह आवाज विधानसभा तक पहुंचाएंगे। अतीत में भी जब अतिवृष्टि जैसी आपदा आई थी, तब आम आदमी पार्टी के आंदोलनों के दबाव में आकर ही सरकार को 10,000 करोड़ रुपये के राहत पैकेज की घोषणा करनी पड़ी थी। अगर हम इसी तरह एकजुट होकर लड़ते रहेंगे, तो भाजपा में चुनाव हारने का डर पैदा होगा और जब उन्हें हार का डर लगेगा, तभी वे किसानों की समस्याएं सुनने पर मजबूर होंगे। आम आदमी पार्टी के विधायक भाई चैतरभाई वसावा आम आदमी की लड़ाई लड़ रहे हैं, इसलिए वे जेल में हैं। भाजपा का दुपट्टा पहनकर गुजरात को लूटने वाले मौज कर रहे हैं। अगर गुजरात को भाजपा की गुलामी और तानाशाही से मुक्त कराना है, तो गुजरात की गली-गली में भाई चैतरभाई वसावा जैसे नेता पैदा करने होंगे।

इसके बाद आम आदमी पार्टी के फ्रंटल संगठन प्रदेश अध्यक्ष और प्रसिद्ध किसान नेता प्रवीण राम ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पूरे गुजरात में खेतों में लगाए जा रहे बिजली के खंभों की समस्या चल रही है और पिछले एक महीने से पूरे गुजरात के अलग-अलग क्षेत्रों में आंदोलन हो रहे हैं। एक किसान पुत्र के रूप में मुझे गर्व है कि गुजरात का किसान अब जाग रहा है। मैं एक किसान पुत्र के रूप में किसानों की मांगों का समर्थन करता हूं। मोरबी के जेतपर में अभी भी धरना जारी है और सरकार को किसानों को समझना होगा तथा उनकी समस्याओं का समाधान करना होगा। खाद नहीं मिल रही, बीज नहीं मिल रहे, ऐसे अनेक सवाल किसानों के सामने खड़े हैं और अब खंभों की समस्या भी खड़ी हो गई है। आम आदमी पार्टी ने तालुका और जिला पंचायत चुनाव से पहले किसानों के मुद्दों पर संघर्ष की एक पूरी श्रृंखला चलाई थी, जिसमें घेड मुद्दा, इकोज़ोन मुद्दा और अंत में हडदड मुद्दे पर लड़ाई लड़ी तथा 108 दिनों तक जेल भी गए। अब यहां से किसानों के लिए संघर्ष की दूसरी श्रृंखला का रणशंख फूंका जा रहा है। जब तक किसानों की समस्याओं का समाधान नहीं होगा, तब तक आम आदमी पार्टी लड़ाई लड़ती रहेगी। आज की इस महापंचायत से हम सरकार को ललकारते हैं कि किसानों की मांगों का समाधान किया जाए और अगर समाधान नहीं किया गया, तो गांधीजी के बताए मार्ग पर आंदोलन जारी रहेगा। हमें गुजरात के किसानों के साथ और सहयोग की जरूरत है। आइए, हम सब मिलकर परिवर्तन लाएं और भाजपा सरकार के साथ-साथ उसके लगाए हुए बिजली के खंभों को भी उखाड़कर फेंक दें।